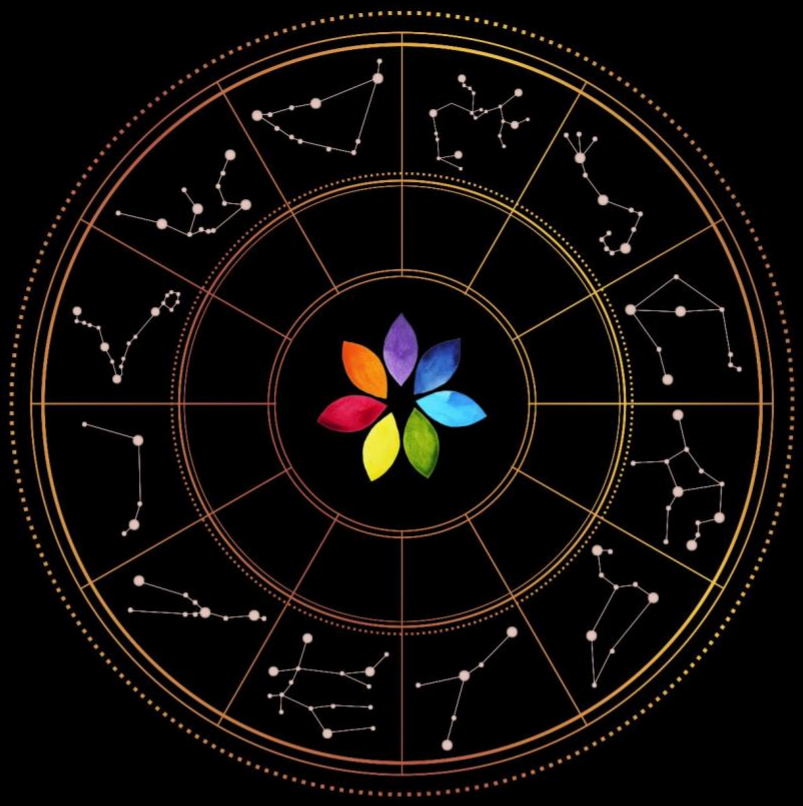

Astrology Camp

WITH

OM SWAMI

Handouts and Notes

Table of Contents

The Vedic Calendar **4**

संवत्सर - वैदिक वर्ष *5*

अयन – गमन 8

ऋतु – मौसम 9

मास – महीने 9

वार - दिन 10

तिथि - चंद्र दिवस 10

योग - चन्द्रमा के सान्निध्य में सूर्य 12

नक्षत्र - नक्षत्र समूह 14

ज्योतिष **18**

वर्ण - प्राथमिक गुण 18

वश्य - श्रेणी 19

योनी - प्रजाति 19

गण – वंश 20

नाड़ी - मनोभाव 23

राशि - चिह्न 23

ग्रह - Planets 24

ग्रह - परस्पर मैत्री - नैसर्गिक मैत्री 25

ग्रह - उच्च और नीच स्थान 26

Planets - Gaze – ग्रह दृष्टि 26

घरों की दशा 27

बारह भाव 28

परिशिष्ट **29**

योग - समकालीन व्याख्या 29

संवत्सर - वैदिक वर्ष - विस्तृत विवरण 32

लग्न - लग्न का चिन्ह 56

द्वादश भाव - कुंडली के बारह घर 60

GENERAL INFORMATION

Discourse Venue ´ Stein Auditorium, India Habitat Centre

Question & Answer Session

Every participant is provided with a colored paper in the registration kit for questions. Participants are requested to kindly write their question (if any) on the colored paper and drop it in the bowl kept in the retreat hall. Questions that are not on the colored slip will not be considered. This is to ensure that everyone gets a chance to ask a question. Only one question per participant.

Taking Care of Your Belongings

Keeping in view the number of participants, it becomes imperative that participants take care of their own belongings like mobile phone, handbags, registration kits etc.

Queries, and Feedback

Queries, if any, can be addressed to the Help Desk Volunteers near the Book Stall. Participants feedback/suggestions to enhance the experience of the future retreats are of great value to us. Any feedback can be deposited in the Feedback Bowl kept at the Help Desk.

Kindness

You are requested to give preference to senior citizens so that they do not have to stand for longer time in lunch/registration/washroom queues or wait for seating.

GENERAL RULES

1	Please turn off your mobile phones and maintain complete silence.
2	No photography and no audio or video recording in the discourse hall.
3	Please don't click pictures of anyone (or Swami Ji's) without their permission.
4	Please take your seat five to ten minutes before the scheduled time.
5	Seats cannot be reserved. Please take whatever seat is available in the discourse hall.
6	If you are coughing or have any other similar issue that is disturbing you during the course, please gently get up and leave quietly to avoid disturbance to others too.
7	Please be present for the lunch on time. Eat mindfully, chew thoroughly and consume less than your appetite.

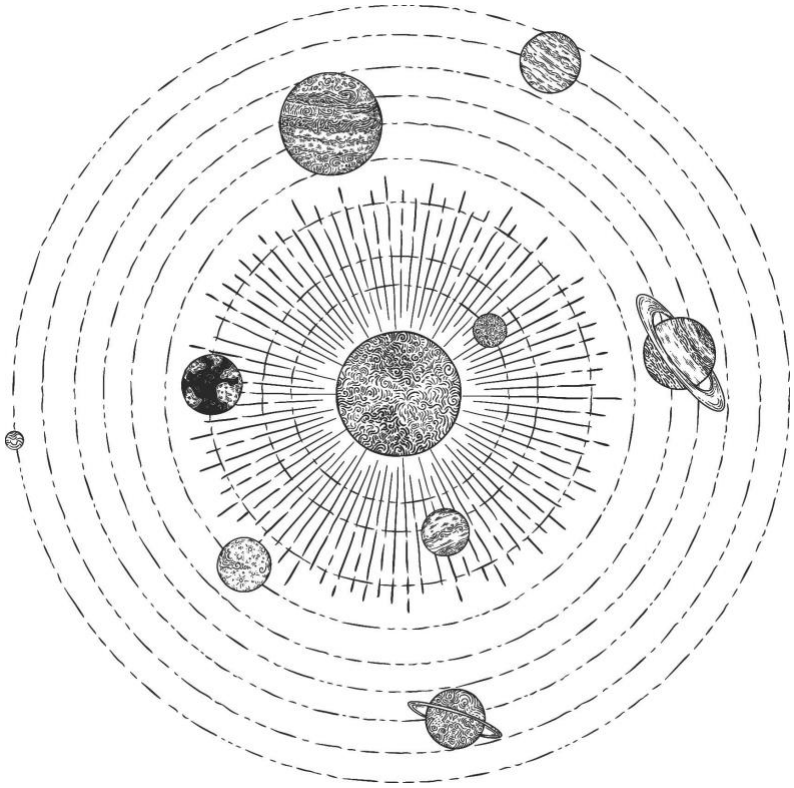

The Vedic Calendar

PANCHANGAM

संवत्सर - वैदिक वर्ष

“वर्ष” को संस्कृत में संवत्सर कहते हैं। वैदिक परंपरा में, ६० संवत्सर होते हैं, हर संवत्सर का अपना एक नाम है। एक बार सारे ६० संवत्सर पूर्ण हो जाते हैं, तो ये चक्र पुनः आरंभ हो जाता है। परंतु कई बार, एक संवत्सर कम हो जाता है, क्योंकि गणना बृहस्पति के सूर्य की परिक्रमा पर आश्रित रहती है, बृहस्पति सूर्य की एक परिक्रमा पूर्ण करने में बारह वर्ष से थोड़ा कम समय लेता है (६० संवत्सर के एक चक्र को पूर्ण होने में पाँच बृहस्पति-वर्षों का समय लगता है)।

ये ६० संवत्सर तीन खंड में विभाजित हैं, हर खंड में २० संवत्सर होते हैं। प्रथम २० संवत्सर, प्रभव से अव्यय तक, ब्रह्मा जी को समर्पित हैं। अगले २० संवत्सर, सर्वजीत से पराभव विष्णु जी, तथा अंतिम २० संवत्सर, शिव जी को समर्पित है।

संवत्सर वो समय है, जितना समय बृहस्पति ग्रह अपनी औसत गति से एक राशि को पार करने में लगाता है, इसी को ‘संवत्सर’ कहा जाता है। जब बृहस्पति राशि-चक्र की एक सम्पूर्ण परिक्रमा पूर्ण करता है तब जा कर बारह (१२) संवत्सर पूर्ण होते हैं। राशि-चक्र में चलते समय, बृहस्पति कई बार पृथ्वी के समीप पहुँच जाता है और कई बार उससे दूर चला जाता है। इसके अतिरिक्त वह अपनी यात्रा के दौरान शुभ अथवा अशुभ किरणों के संपर्क में भी आता है। इसी तथ्य के कारण प्रत्येक संवत्सर का प्रभाव अलग-अलग होता है।[1]

संवत्सर - वैदिक वर्ष			
१	प्रभव	१९८७-१९८८	१९२७-१९२८
२	विभव	१९८८-१९८९	१९२८-१९२९
३	शुक्ल	१९८९-१९९०	१९२९-१९३०
४	प्रमोदूत	१९९०-१९९१	१९३०-१९३१
५	प्रजापति	१९९१-१९९२	१९३१-१९३२
६	अंगिरस	१९९२-१९९३	१९३२-१९३३
७	श्रीमुख	१९९३-१९९४	१९३३-१९३४

[1] षड्वर्ग के जॉर्ज एंजेलिनो से लिया गया। satva.blogspot.com. प्रत्येक संवत्सर के प्रभाव इस आलेख के अंत में परिशिष्ट में देखे जा सकते हैं।

संवत्सर - वैदिक वर्ष			
८	भाव	१९९४-१९९५	१९३४-१९३५
९	युवा	१९९५-१९९६	१९३५-१९३६
१०	धाता	१९९६-१९९७	१९३६-१९३७
११	ईश्वर	१९९७-१९९८	१९३७-१९३८
१२	बहुधान्य	१९९८-१९९९	१९३८-१९३९
१३	प्रमाथी	१९९९-२०००	१९३९-१९४०
१४	विक्रम	२०००-२००१	१९४०-१९४१
१५	वृषा	२००१-२००२	१९४१-१९४२
१६	चित्रभानु	२००२-२००३	१९४२-१९४३
१७	सुभानु	२००३-२००४	१९४३-१९४४
१८	तारण	२००४-२००५	१९४४-१९४५
१९	पार्थिव	२००५-२००६	१९४५-१९४६
२०	अव्यय	२००६-२००७	१९४६-१९४७
२१	सर्वजीत	२००७-२००८	१९४७-१९४८
२२	सर्वधारी	२००८-२००९	१९४८-१९४९
२३	विरोधी	२००९-२०१०	१९४९-१९५०
२४	विकृति	२०१०-२०११	१९५०-१९५१
२५	खर	२०११-२०१२	१९५१-१९५२
२६	नंदन	२०१२-२०१३	१९५२-१९५३
२७	विजय	२०१३-२०१४	१९५३-१९५४
२८	जय	२०१४-२०१५	१९५४-१९५५
२९	मन्मथ	२०१५-२०१६	१९५५-१९५६
३०	दुर्मुख	२०१६-२०१७	१९५६-१९५७
३१	हेमलंबी	२०१७-२०१८	१९५७-१९५८
३२	विलंबी	२०१८-२०१९	१९५८-१९५९
३३	विकारी	२०१९-२०२०	१९५९-१९६०
३४	शार्वरी	२०२०-२०२१	१९६०-१९६१

संवत्सर - वैदिक वर्ष			
३५	प्लव	२०२१-२०२२	१९६१-१९६२
३६	शुभकृत	२०२२-२०२३	१९६२-१९६३
३७	शोभकृत	२०२३-२०२४	१९६३-१९६४
३८	क्रोधी	२०२४-२०२५	१९६४-१९६५
३९	विश्वावसु	२०२५-२०२६	१९६५-१९६६
४०	पराभव	२०२६-२०२७	१९६६-१९६७
४१	प्लवंग	२०२७-२०२८	१९६७-१९६८
४२	कीलक	२०२८-२०२९	१९६८-१९६९
४३	सौम्य	२०२९-२०३०	१९६९-१९७०
४४	साधारण	२०३०-२०३१	१९७०-१९७१
४५	विरोधकृत	२०३१-२०३२	१९७१-१९७२
४६	परिधावी	२०३२-२०३३	१९७२-१९७३
४७	प्रमादी	२०३३-२०३४	१९७३-१९७४
४८	आनंद	२०३४-२०३५	१९७४-१९७५
४९	राक्षस	२०३५-२०३६	१९७५-१९७६
५०	आनल	२०३६-२०३७	१९७६-१९७७
५१	पिंगल	२०३७-२०३८	१९७७-१९७८
५२	कालयुक्त	२०३८-२०३९	१९७८-१९७९
५३	सिद्धार्थी	२०३९-२०४०	१९७९-१९८०
५४	रौद्र	२०४०-२०४१	१९८०-१९८१
५५	दुर्मति	२०४१-२०४२	१९८१-१९८२
५६	दुन्दुभी	२०४२-२०४३	१९८२-१९८३
५७	रूधिरोद्गारी	२०४३-२०४४	१९८३-१९८४
५८	रक्ताक्षी	२०४४-२०४५	१९८४-१९८५
५९	क्रोधन	२०४५-२०४६	१९८५-१९८६
६०	क्षय	२०४६-२०४७	१९८६-१९८७

अयन - गमन

उत्तरायण शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो भिन्न शब्द “उत्तर”(उत्तर दिशा) और “अयन”(गमन) के संगम से हुई है। अर्थात, 'उत्तरायण' (= उत्तर + अयन) का शाब्दिक अर्थ है - 'उत्तर में गमन', एक प्रकार से आकाशीय पिंड में सूर्य के उत्तर दिशा में गमन को दर्शाते हुए। सूर्य का यह गमन प्रारंभ होता है दिसम्बर में, शीत अयनांत के एक दिन बाद से जो कि घटित होता है २२ दिसम्बर के आसपास, और यह गमन जारी रहता है अगले छह-माह की अवधि तक ग्रीष्म अयनांत के आगमन तक, जो कि आता है २१ जून के आसपास (ये दोनों ही तिथियां बदलती रहती हैं)।

ग्रीष्म अयनांत और शीत अयनांत के बीच छह महीने की अवधि दक्षिणायन कहलाती है, जब सूर्य आकाशीय पिंड में दक्षिण की ओर गमन करता है।
कर्क संक्रांति या जून २० को दक्षिणायन प्रारंभ होता है, क्योंकि इस दिन सूर्य कर्क राशि (Cancer) में प्रवेश करता है।

यह हिंदू कैलेंडर के छह महीने के उत्तरायण काल के अंत और दक्षिणायन की शुरुआत का प्रतीक है, जो स्वयं मकर संक्रांति पर समाप्त होता है और उत्तरायण काल शुरू होता है।
पुराणों के अनुसार, दक्षिणायन उस अवधि को दर्शाता है जब देवी-देवता अपने दिव्य नींद में होते हैं।

अयनांत या संक्रांति वर्ष में दो मौकों में से किसी एक का प्रतिनिधित्व करती है जब सूर्य भूमध्य रेखा के या तो सबसे दूर के उत्तर बिंदु में या सबसे दूर के दक्षिण बिंदु में होता है जहाँ वो पहुँच पाता है। ये वर्ष में ग्रीष्म ऋतु या शीत ऋतु के बिल्कुल मध्य का समय होता है, जब दिन या रात सबसे लंबी अवधि के होते हैं।

अयन – गमन			
उत्तरायण	शीत अयनांत	उत्तर की ओर	दिसम्बर २२ – जून २०
दक्षिणायन	ग्रीष्म अयनांत	दक्षिण की ओर	जून २१– दिसम्बर २१

ऋतु - मौसम

ऋतु – मौसम	
बसंत	स्प्रिंग
ग्रीष्म	समर
वर्षा	मानसून
शरद	ऑटम
हेमंत	प्री-विंटर
शिशिर	विंटर

मास - महीने

मास - महीने	
राशि चक्र में सूर्य की चाल के आधार पर। अंग्रेजी तारीखें मास की शुरुआत दर्शा रही हैं।	
चैत्र	मार्च २२ / २१ (अधिवर्ष या लीप वर्ष में)
वैशाख	अप्रैल २१
ज्येष्ठ	मई २२
आषाढ़	जून २२
श्रावण	जुलाई २३
भाद्रपद	अगस्त २३
आश्विन	सितंबर २३
कार्तिक	अक्टूबर २३
मार्गशीर्ष	नवंबर २२
पौष	दिसंबर २२
माघ	जनवरी २१
फाल्गुन	फरवरी २०

वार - दिन

वार - दिन			
हिन्दी	**अंग्रेजी**	**शासक ग्रह**	**रंग**
रविवार	संडे	सूर्य	लाल
सोमवार	मंडे	चन्द्रमा	सफेद
मंगलवार	ट्यूस्डे	मंगल	नारंगी
बुधवार	वेंजडे	बुध	हरा
गुरुवार	थर्सडे	बृहस्पति	पीला
शुक्रवार	फ्राइडे	शुक्र	सफेद
शनिवार	साटर्डे	शनि	काला

तिथि - चंद्र दिवस

तिथि - चंद्र दिवस		
हिन्दी	**अंग्रेजी**	**पीठासीन देवता और गुण**
प्रतिपदा	फर्स्ट	प्रथम चंद्र दिवस के अधिष्ठाता देवता अग्नि है और यह सभी प्रकार के शुभ और धार्मिक समारोहों के लिए अच्छा है।
द्वितीया	सेकंड	विधाता या ब्रह्मा इस चंद्र दिवस पर शासन करते हैं और इमारतों की नींव रखने के लिए और स्थायी प्रकृति की अन्य चीजें की शुरुआत के लिए अच्छा है।
तृतीया	थर्ड	गौरी इस दिन की स्वामिनी हैं और किसी के बाल और नाखून काटने और हजामत बनाने के लिए यह दिन अच्छा है।
चतुर्थी	फोर्थ	यम/गणपति चौथे चंद्र दिवस के स्वामी हैं, जो किसी के शत्रुओं के विनाश के लिए, बाधाओं को दूर करना, और युद्ध के कार्य के लिए अच्छा है।

तिथि - चंद्र दिवस		
पंचमी	फिफ्थ	इस दिन नाग या सर्पों का शासन होता है, जो कि औषधि खिलाने के लिए, जहर के शुद्धिकरण के लिए, और सर्जरी के लिए अनुकूल है।
षष्ठी	सिक्स्थ	कार्तिकेय इस दिन की अध्यक्षता करते हैं और राज्याभिषेक, नए मित्रों से मिलने, उत्सव, और आनंद के लिए अच्छा है।
सप्तमी	सेवंथ	7वें चंद्र दिवस पर सूर्य का शासन है; कोई यात्रा शुरू कर सकता है, वाहन ख़रीद सकता है और चल प्रकृति की ऐसी अन्य चीजों में डील कर सकता है।
अष्टमी	ऐट्थ	इस दिन रुद्र शासन करते हैं, जो शस्त्र उठाने, अपनी सुरक्षा के निर्माण जैसे दुर्ग इत्यादि के लिए अच्छा है।
नवमी	नाइन्थ	इस दिन अंबिका शासन करती है, जो दुश्मनों को मारने, विनाश के कार्य और हिंसा के लिए उपयुक्त है। समारोहों और यात्राओं के लिए अशुभ है।
दशमी	टेंथ	यह दिन धर्मराज द्वारा शासित है और पुण्य, धार्मिक कार्यों, आध्यात्मिक कार्यों, प्रथाओं, और अन्य पवित्र गतिविधियोंके लिए शुभ है।
एकादशी	इलेवेंथ	रुद्र इस दिन शासन करते हैं; उपवास, भक्ति गतिविधियाँ, और परम भगवान का स्मरण बहुत अनुकूल हैं। इस दिन का हिंदू धर्म और जैन धर्म में विशेष धार्मिक महत्व है- आमतौर परउपवास करके मनाया जाता है।
द्वादशी	ट्वेल्फ्थ	इस दिन विष्णु या इत्य का शासन है, जो धार्मिक समारोहों, पवित्र अग्नि की रोशनी और अपने कर्तव्यों के पालन के लिए शुभ है।
त्रयोदशी	थरटीन्थ	यह दिन कामदेव द्वारा शासित होता है और दोस्ती, काम सुख और उत्सव मनाने के लिए अच्छा है।
चतुर्दशी	फोर्टीन्थ	काली इस दिन का शासन करती हैं, यह दिन विष देने के लिए, और तत्वों और आत्माओं का आह्वान के लिए उपयुक्त है।

तिथि - चंद्र दिवस		
अमावस्या / पूर्णिमा	न्यू मून / फूल मून	पितृ-देवता अमावस्या पर शासन करते हैं, जो पितरों की शांति और तपस्या के प्रदर्शन के लिए उपयुक्त है। पूर्णिमा पर चंद्रमा का शासन है और उत्सव मनाने और अग्नि बलिदान के लिए उपयुक्त है।

योग - चन्द्रमा के सान्निध्य में सूर्य

प्रत्येक योग की पारंपरिक परिभाषा नीचे दी गई है। समकालीन व्याख्याओं के लिए, कृपया परिशिष्ट देखें।

योग - सूर्य और चंद्रमा के बीच कोणीय संबंध		
हिन्दी	**अर्थ**	**गुण**
विष कुम्भ	समर्थित	दूसरों पर विजय प्राप्त करता है, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, संपत्ति प्राप्त करता है, धनवान।
प्रीति	आत्मीयता	सुप्रिय, विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित, भोग करते हुए संतोष के साथ जीवन व्यतीत करता है।
आयुष्मान	दीर्घायु	अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु, ऊर्जावान।
सौभाग्य	सौभाग्य	अवसरों से भरा एक आरामदायक जीवन का आनंद लेता है, प्रसन्न।
शोभन	वैभव	तेजस्वी शरीर और व्यवहार कामुक, यौन आसक्त।
अति गंडमूल	खतरनाक	कई बाधाओं के कारण कठिन जीवन और दुर्घटनाएं; प्रतिशोधी और क्रोधित।
सुकर्मा	धार्मिक	नेक काम करता है, उदार और परोपकारी, धनवान।
धृति	दृढ़ निश्चय	दूसरों के धन, संपत्ति और जीवनसाथी का आनंद लेता है; दूसरों के आतिथ्य में लिप्त रहता है।

योग - सूर्य और चंद्रमा के बीच कोणीय संबंध		
शूल	भाला	टकराव और विपरीत, झगड़ालू, नाराज़।
गंड	बाधाएं	त्रुटिपूर्ण नैतिकता या आचार, परेशानी भरा व्यक्तित्व।
वृद्धि	वृद्धि	बुद्धिमान, अवसरवादी और समझदार; जीवन में उम्र के साथ लगातार सुधार होता है।
धुव्र	नियत	स्थिर चरित्र, ध्यान केंद्रित करने और बने रहने में सक्षम, धनवान।
व्याघात	क्रूर	क्रूर, दूसरों को नुकसान पहुँचाने का इरादा।
हर्षण	रोमांच	बुद्धिमान, आनंद और हास्य में प्रसन्न।
वज्र	वज्र	अच्छी तरह से जीवन यापन करने वाला, लचर, अप्रत्याशित, जबरदस्ती करने वाला।
सिद्धि	सफलता	कुशल और कई क्षेत्रों में निपुण; दूसरों का रक्षक और समर्थक।
व्यतिपात	आपदा	अचानक दुर्घटना और उलटफेर के लिए प्रवण, चंचल और अविश्वसनीय।
वरीयान	आराम	आराम और विलासिता को पसंद करता है, आलसी, कामुक।
परिघ	बाधा	जीवन में प्रगति के लिए कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है; चिड़चिड़ा और दखल देने वाला।
शिव	परोपकारी	वरिष्ठों और सरकार द्वारा सम्मानित, शांत, ज्ञानी और धार्मिक, धनी।
सिद्ध	कुशल	मिलनसार व्यक्तित्व, सुखद स्वभाव, कर्मकांड और अध्यात्म में रुचि।
साध्य	इच्छित / सुलभ	अच्छा व्यवहार, निपुण, और शिष्ट।
शुभ	शुभ	चमकदार शरीर और व्यक्तित्व, लेकिन समस्याओं के साथ स्वास्थ्य; धनवान, चिड़चिड़ा।
शुक्ल	उज्ज्वल / वैक्सिंग	बातूनी और चंचल, अधीर और आवेगी; अस्थिर और परिवर्तनशील मन।

योग - सूर्य और चंद्रमा के बीच कोणीय संबंध		
ब्रह्म	सत्य	भरोसेमंद और गोपनीय, महत्वाकांक्षी, विवेक और अच्छा निर्णय लेने वाला।
इन्द्र	प्रमुख	शिक्षा और ज्ञान में रुचि; मददगार, धनी।
वैघृति	हेराफेरी / विरोध	गंभीर, योजनाबद्ध प्रकृति; शक्तिशाली और मानसिक या शारीरिक रूप से भारी।

नक्षत्र - नक्षत्र समूह

नक्षत्र - नक्षत्र समूह और अक्षर					
हिन्दी		चरण - विभाजन / चाल			
		Q1	Q2	Q3	Q4
1	अश्विनी	चु	चे	चो	ला
2	भरणी	ली	लू	ले	लो
3	कृत्तिका	अ	इ	उ	ए
4	रोहिणी	ओ	वा/बा	वी/बी	वू/बू
5	मृगशिरा	वे/बे	वो/बो	का	की
6	आर्द्रा	कु	घ	ङ/न	छ
7	पुनर्वसु	के	को	हा	ही
8	पुष्य	हु	ही	हो	ड
9	अश्लेषा	डी	डू	डे	डो
10	मघा	मा	मी	मू	मे
11	पूर्वाफाल्गुनी	मो	ता	ती	तू
12	उत्तराफाल्गुनी	ते	तो	पा	पी
13	हस्त	पू	श	न	थ
14	चित्रा	पे	पो	रा	री

नक्षत्र - नक्षत्र समूह और अक्षर					
15	स्वाती	रू	रे	रो	ता
16	विशाखा	ती	तू	ते	तो
17	अनुराधा	ना	नी	नू	ने
18	ज्येष्ठा	नो	या	यी	यू
19	मुल	ये	यो	भा	भी
20	पुर्वाषाढा	भू	धा	भा/फा	दा
21	उत्तरषाढा	भे	भो	जा	जी
22	श्रवण	जु/खी	जे/खू	जो/खे	घ/खो
23	स्रविष्ठा / धनिष्ठा	गा	गी	गु	गे
24	शतभिषा	गो	सा	सी	सू
25	पूर्वभाद्रपद	से	सो	डा	डी
26	उत्तरभाद्रपद	डू	था	झा	न
27	रेवती	डे	डो	चा	ची

साथ ही, अभिजीत नक्षत्र भी है जो नियमित नक्षत्र नहीं है। यह प्रतिदिन लगभग एक घंटे के लिए प्रकट होता है और इसे सर्व-सिद्धि मुहूर्त माना जाता है।

करण - एक चंद्र दिवस का आधा

करण (तिथि का आधा भाग)	
बव	इस करण में पैदा हुए लोग धार्मिक होते हैं और पवित्र कार्यों में शामिल होना पसंद करते हैं। वे ईमानदार होते हैं और उन्हें सौंपे गए किसी भी काम में अपना सर्वश्रेष्ठ देने में विश्वास करते हैं। ये अवैध और नापाक गतिविधियों से दूरी बनाए रखते हैं। उनके पास तेज दिमाग होता है और वे वास्तविकता से मजबूती से जुड़े होते हैं। इसलिए वो कल्पना की उड़ान नहीं भरते हैं। वे अपने गुणों के लिए सभी का सम्मान और प्यार पाते हैं।

करण (तिथि का आधा भाग)	
बालव	पिछले करण की तरह यह भी जातक को एक धार्मिक स्वभाव देता है। इस करण में जन्म लेने वाले व्यक्ति तीर्थ यात्रा कर सकते हैं और अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा धार्मिक गतिविधियों में व्यतीत कर सकते हैं। वे अच्छी तरह से शिक्षित होते हैं और बहुत सफल जीवन जीते हैं।
कौलव	इस करण में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुत ही मिलनसार होते हैं। यह करण अपने जातकों को प्यार और देखभाल जैसे कुछ बेहतरीन गुण प्रदान करता है। इनके मित्रों का दायरा वास्तव में बहुत बड़ा होता है और जातक को आमतौर पर अपने मित्रों से सहायता प्राप्त होती है। इन लोगों में बहुत मजबूत आत्म-सम्मान होता है और चाहे कुछ भी हो जाए ये दूसरों के सामने नहीं झुकते हैं।
तैतिल	इस करण में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुत भाग्यशाली होते हैं। उनका समृद्ध जीवन होता है और वे इमारतों और संपत्ति के मालिक बन जाते हैं। इनके जीवन में प्यार की अहम भूमिका होती है और शायद यही कारण है कि ये लोगों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करते हैं।
गर	ज्योतिष शास्त्र कहता है कि गर करण के जातक परिश्रमी होते हैं। इन्हें किस्मत पर नहीं अपनी काबिलियत पर भरोसा होता है। वे कड़ी मेहनत और श्रम से अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। इस करण के जातक कृषि तथा घरेलू कार्यों में निपुण होते हैं।
वणिज	इस करण के जातक बुद्धिमान होते हैं। यह देखा गया है कि उनकी व्यवसाय में गहरी रुचि होती है और वे आजीविका कमाने के लिए इस व्यवसाय को अपनाते हैं। वे यात्रा करना पसंद करते हैं और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उन्हें बहुत यात्रा करनी पड़ सकती है। इनकी बुद्धि मूल रूप से व्यापार उन्मुख होती है।

करण (तिथि का आधा भाग)	
विष्टि	ज्योतिष शास्त्र में विष्टि करण को शुभ नहीं माना जाता है। यह करण अपना अशुभ स्वभाव जातक पर डालता है जिसके कारण जातक का चरित्र संदिग्ध हो सकता है। अनैतिक कार्यों में लिप्त हो सकते हैं। इस करण के जातकों की खासियत यह है कि वे अपने दुश्मन से बदला लेने के लिए चरम सीमा तक जा सकते हैं।
शकुनि	इस करण के जातक कानून और न्याय के अनुयायी होते हैं। विवादों को सुलझाने में ये बहुत समझदार होते हैं। अर्थात किसी भी झगड़े को अपनी बुद्धि से खारिज करने में ये काफी कुशल हो सकते हैं। वे दवा में रुचि लेते हैं और डॉक्टर या चिकित्सक बन सकते हैं।
चतुष्पाद	यह करण अपने जातकों को धार्मिक प्रवृत्ति प्रदान करता है। इस करण में पैदा हुए लोग विद्वान लोगों का सम्मान करते हैं और जानवरों की सेवा करते हैं। वे आम तौर पर जानवरों के बहुत शौकीन होते हैं और जानते हैं कि दवाओं के साथ जानवरों का इलाज कैसे किया जाता है। वे सफल पशु चिकित्सक बन सकते हैं।
नाग	ज्योतिष इस करण को अशुभ मानता है। इस करण में जन्में जातकों के साथ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हो सकती हैं। उनका जीवन संघर्षों और कठिनाइयों से भरा हो सकता है। इन्हें मेहनत और प्रयास से ही फल मिलेगा, भाग्य से नहीं। नाग करण के लोग आमतौर पर बहुत अधीर होते हैं।
किस्तुघ्न	इस करण के जातक बहुत भाग्यशाली होते हैं। वे आक्रामक रूप से मानवीय कार्यों को आगे बढ़ाते हैं। इन्हें अपने जीवन में हर प्रकार की खुशियों की प्राप्ति होगी। वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी प्राप्त करते हैं और एक समृद्ध जीवन जीते हैं।

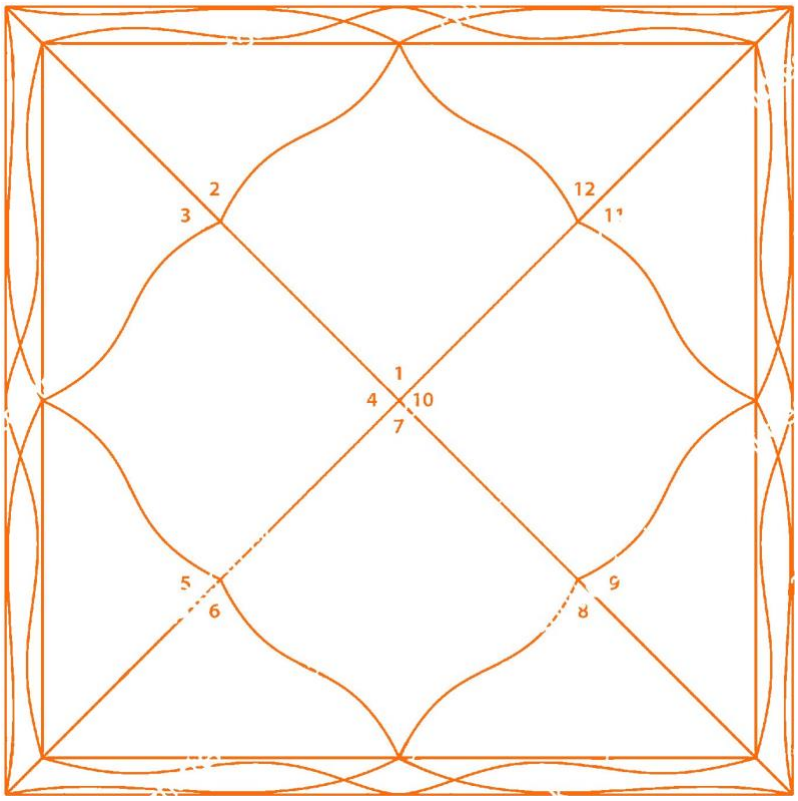

ज्योतिष

वर्ण - प्राथमिक गुण

वर्ण	
ब्राह्मण	बुद्धि
क्षत्रिय	वीरता
वश्य	व्यापार
शूद्र	कला

वश्य - श्रेणी

वश्य	
चतुष्पाद	चतुर्भुज
द्विपाद	इंसान
जलचर	जलजनित
वनचर	जंगली जानवर
कीट	कीड़े

योनी - प्रजाति

योनी - प्रजाति	
अश्व	घोड़ा
गज	हाथी
मेष	राम
सर्प	सांप
श्वान	कुत्ता
मार्जार	बिल्ली
मूषक	चूहा
गौ	गाय
महिष	बैल
व्याघ्र	बाघ
मृग	हिरण
वानर	बंदर
नकुल	नेवला

योनी - प्रजाति	
सिंह	शेर

गण - वंश

तीन गण होते हैं। गणों को संस्कृति, सभ्यता या यहां तक कि एक पैतृक वंश के रूप में सोचें।[2]

गण	
मनुष्य	रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वा आषाढ़, पूर्वा भाद्रपद, उत्तर फाल्गुनी, उत्तर आषाढ़, उत्तर भाद्रपद, भरणी और आर्द्रा में जन्म लेने वाले मनुष्य गण के होते हैं। वैदिक ज्योतिष कहता है कि मनुष्य गण में जन्म लेने वाले व्यक्ति आत्म सम्मान को महत्व देते हैं। इस गण के मूल निवासी आमतौर पर धन के साथ धन्य होते हैं और एक समृद्ध जीवन जीते हैं। इस गण के लोगों का शरीर सुडौल, लंबा शरीर संरचना और बड़ी-बड़ी आंखें होती हैं। उनके पास आकर्षक काया है और आंखों और चेहरे की अच्छी तरह से परिभाषित संरचना उनकी सुंदरता को बढ़ाती है। मनुष्य गण के लोग गर्म और देखभाल करने वाले स्वभाव के होते हैं। ये लोग कार्यस्थल पर उन्हें सौंपे गए कार्यों को समय पर पूरा करना पसंद करते हैं और अपने परिवार के पास घर लौट जाते हैं। उन्हें ऑफिस में अतिरिक्त घंटे बर्बाद करना पसंद नहीं है। वे अपना काम पूरा कर लेंगे और अगर कोई उनसे मदद मांगेगा तो वे व्यस्त होने का नाटक करेंगे।

[2] प्रत्येक गण का वर्णन astrobix.com के माध्यम से लिया गया है।

गण	
देव	पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, स्वाति, हस्त, श्रवण, रेवती और अश्विनी में जन्म लेने वाले देवगण होते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार देव गण में जन्म लेने वाले व्यक्ति में कई सकारात्मक विशेषताएं होती हैं। वे एक अच्छी काया के साथ आकर्षक हैं। देव गण जातक को बुद्धिमान और तेजवान बनाता है। वे बुद्धिमान विचारों वाले सरल व्यक्ति हैं। देव गण के लोग दयालु और विनम्र होते हैं; विकलांगों और गरीब लोगों के प्रति उनका मददगार रवैया उनके स्वभाव का एक प्रमुख गुण है। ये परेशान लोगों की दिल खोलकर मदद करते हैं। देव गण के मूल निवासी पेटू नहीं होते हैं और मितव्ययी खाने वाले होते हैं। उनमें एक अंतर्निहित देवत्व होता है जो बहुत कम मनुष्यों के अंदर मौजूद होता है। मूल रूप से वे ऐसे लोग हैं जो बिना किसी अपेक्षा के दूसरों के लिए काम करते हैं। यदि आप किसी संकट से गुजर रहे हैं और देव गण के जातकों से संपर्क करते हैं, तो वे आपकी बात को गंभीरता से सुनेंगे और आपकी समस्याओं के समाधान के उपाय सुझाने का प्रयास करेंगे। यह उनके स्वभाव के करुणामय पक्ष को दर्शाता है।
राक्षस	माघ, अश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, शतभिषा, कृतिका, चित्रा और विशाखा में जन्म लेने वाले राक्षस गण के होते हैं। इन नक्षत्रों के मामले में मनुष्य के अंधेरे पक्ष को रेखांकित और उजागर किया जाता है। जिन लोगों का जन्म गण राक्षस गण है उनका स्वभाव जिद्दी और कठोर हो सकता है। वे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं, जो कभी-कभी एक अच्छा निर्णय नहीं होता। उनके पास एक भारी शरीर है और काफी आक्रामक हो सकते हैं। राक्षस गण अनेक मनुष्यों के भीतर व्याप्त राक्षसी प्रकृति का द्योतक है। राक्षस गण के जातकों का स्वभाव ऐसा होता है कि वे दूसरों को बढ़ता हुआ नहीं देख सकते हैं। अगर कोई मदद मांगता है तो ऐसा व्यवहार करेंगे कि दोबारा मांगने की हिम्मत नहीं होगी।

गण	
	छोटी-छोटी बातों पर लड़ने की प्रवृत्ति हो सकती है। ये कठोर भी लग सकते हैं और दूसरों पर उनके शब्दों और कार्यों के प्रभाव को समझने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। ऐसा पाया गया है कि राक्षस गण के लोग मधुमेह के शिकार होते हैं।

नाड़ी - मनोभाव

नाड़ी - मनोभाव	
आदि	प्रथम
मध्य	मध्य
अन्त्य	अंत

राशि - चिह्न

यह राशि चक्र में आपका सूर्य, चंद्रमा या लग्न हो सकता है। अर्थ के लिए प्रत्येक लग्न राशि में जन्म लेने का क्या अर्थ है, परिशिष्ट देखें।

राशि - चिह्न			
मेष	Aries	मंगल	Mars
वृष	Taurus	शुक्र	Venus
मिथुन	Gemini	बुध	Mercury
कर्क	Cancer	चंद्र	Moon
सिंह	Leo	सूर्य	Sun
कन्या	Virgo	बुध	Mercury
तुला	Libra	शुक्र	Venus
वृश्चिक	Scorpio	मंगल	Mars
धनु	Sagittarius	बृहस्पति	Jupiter
मकर	Capricorn	शनि	Saturn
कुंभ	Aquarius	शनि	Saturn
मीन	Pisces	बृहस्पति	Jupiter

ग्रह - Planets

ग्रह - Planets	
Sun	सूर्य
Moon	चंद्र
Mars	मंगल
Mercury	बुध
Jupiter	बृहस्पति – गुरु
Venus	शुक्र
Saturn	शनि
Rahu	राहू
Ketu	केतु

ग्रह - परस्पर मैत्री - नैसर्गिक मैत्री

ग्रहों की नैसर्गिक या डिफ़ॉल्ट मित्रता होती है जिसे उनका स्थायी संबंध माना जाता है। हालाँकि, स्थायी मित्रता के अलावा, वैदिक ज्योतिष में चार्ट में ग्रहों की स्थिति के आधार पर अस्थायी संबंध होते हैं। ये अस्थायी (तत्काल) संबंध विषय के चार्ट के लिए विशिष्ट हैं। ग्रह के कब्जे वाले घर से गिने जाने वाले दूसरे, तीसरे, चौथे, 10वें, 11वें और 12वें घर में रहने वाले ग्रह इसके अस्थायी मित्र हैं। अन्य भावों में विराजमान ग्रह इसके अस्थायी शत्रु होते हैं।

ग्रह - आपसी मित्रता और विरोध			
ग्रह	**समर्थक**	**निष्पक्ष**	**विरोधी**
Sun (सूर्य)	Moon, Mars, Jupiter	Mercury	Venus, Saturn, राहू, केतु
Moon (चंद्र)	Sun, Mars, Jupiter	Mercury, Venus, Saturn, राहू, केतु	कोई शत्रु ग्रह नहीं
Mars (मंगल)	Sun, Moon, Jupiter	Saturn, केतु	Mercury, Venus, राहू
Mercury (बुध)	Venus, Saturn, राहू	Sun, Moon, केतु	Mars, Jupiter
Jupiter (गुरु)	Sun, Moon, Mars	Venus, केतु	Mercury, Saturn, राहू
Venus (शुक्र)	Mercury, Saturn, राहू, केतु	Moon, Jupiter	Sun, Mars
Saturn (शनि)	Mercury, Venus, राहू, केतु	Moon, Mars	Sun, Jupiter
राहू	Mercury, Venus, Saturn	Moon, केतु	Sun, Mars, Jupiter
केतु	Venus, Saturn	Moon, Mars, Mercury, Jupiter, राहू	Sun

ग्रह - उच्च और नीच स्थान

ग्रह - उच्च और नीच स्थान			
ग्रह	**Exalted (उच्चस्थ)**	**Debilitated (नीचस्थ)**	**Own Sign (स्वग्रही)**
Sun	Aries (मेष)	Libra (तुला)	Leo (सिंह)
Moon	Taurus (वृष)	Scorpio (वृश्चिक)	Cancer
Mars	Capricorn (मकर)	Cancer (कर्क)	Aries, Scorpio
Mercury	Virgo (कन्या)	Pisces (मीन)	Gemini, Virgo
Jupiter	Cancer (कर्क)	Capricorn (मकर)	Sagittarius, Pisces
Venus	Pisces (मीन)	Virgo (कन्या)	Taurus, Libra
Saturn	Libra (तुला)	Aries (मेष)	Capricorn, Aquarius (कुंभ)
राहू	Sagittarius (धनु)	Gemini (मिथुन)	
केतु	Gemini (मिथुन)	Sagittarius (धनु)	

Planets - Gaze - ग्रह दृष्टि

Planets – ग्रह दृष्टि	
Planet / ग्रह	**Gaze – पूर्ण-दृष्टि**
Sun (सूर्य)	7वां घर
Moon (चंद्र)	7वां घर
Mars (मंगल)	7वां घर + चौथा और आठवां घर भी
Mercury (बुध)	7वां घर
Jupiter (गुरु)	7वां घर + 5वां और 9वां घर भी
Venus (शुक्र)	7वां घर
Saturn (शनि)	7वां घर + तीसरा और दसवां घर भी
राहू	7वां घर (कुछ के अनुसार 5वां और 9वां भी)
केतु	7वां घर (कुछ के अनुसार 5वां और 9वां भी)

घरों की दशा

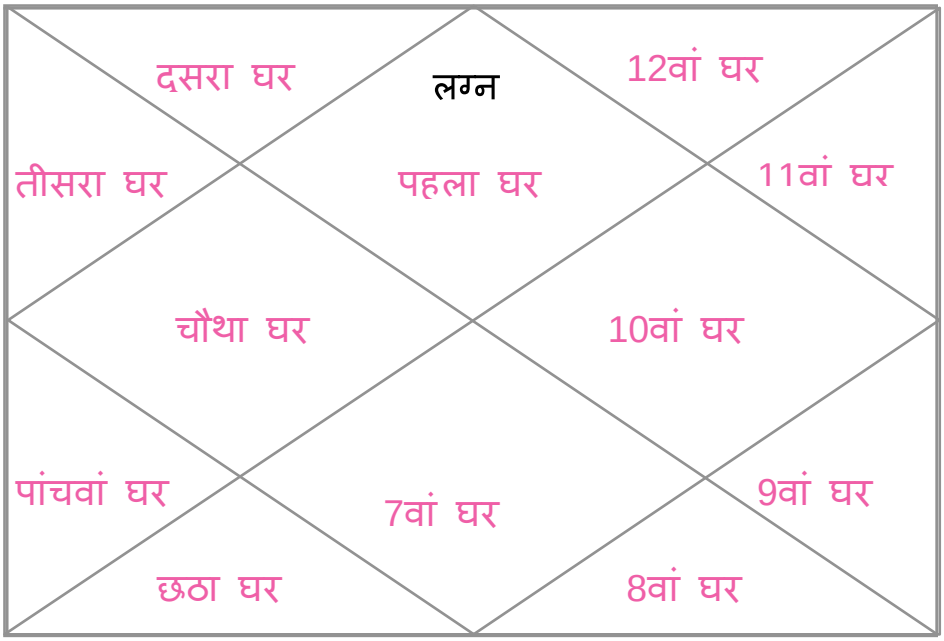
दसरा घर
लग्न
12वां घर
तीसरा घर
पहला घर
11वां घर
चौथा घर
10वां घर
पांचवां घर
7वां घर
9वां घर
छठा घर
8वां घर

नोट्स

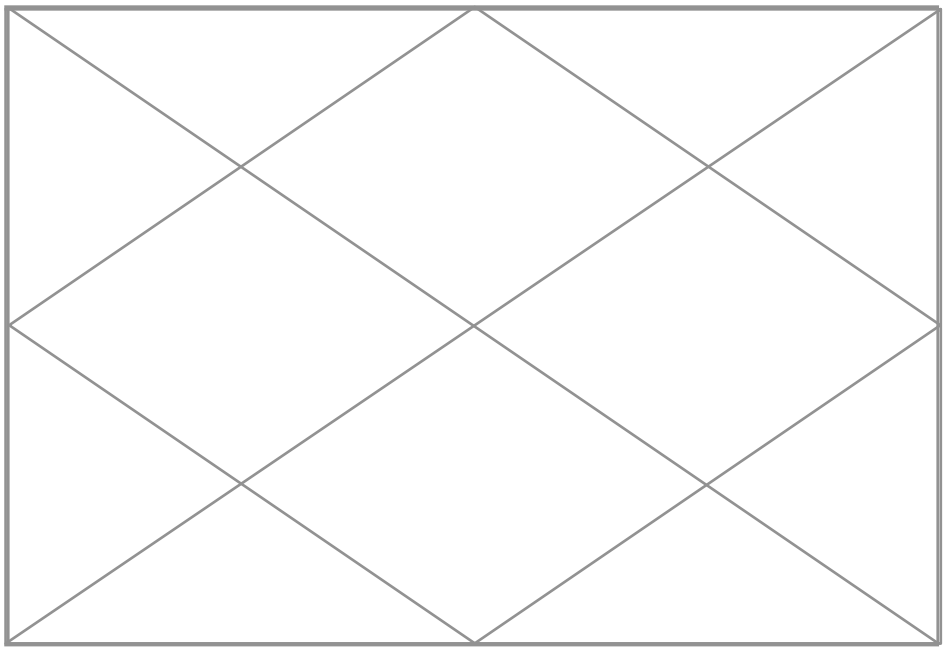

बारह भाव

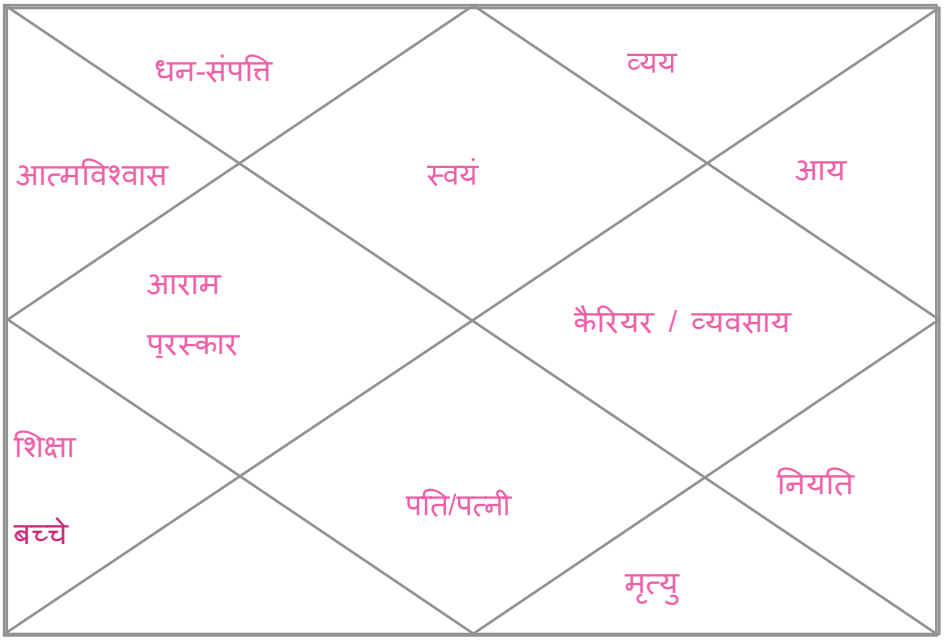
धन-संपत्ति
व्यय
आत्मविश्वास
स्वयं
आय
आराम
पुरस्कार
कैरियर / व्यवसाय
शिक्षा
बच्चे
पति/पत्नी
नियति
मृत्यु

Notes

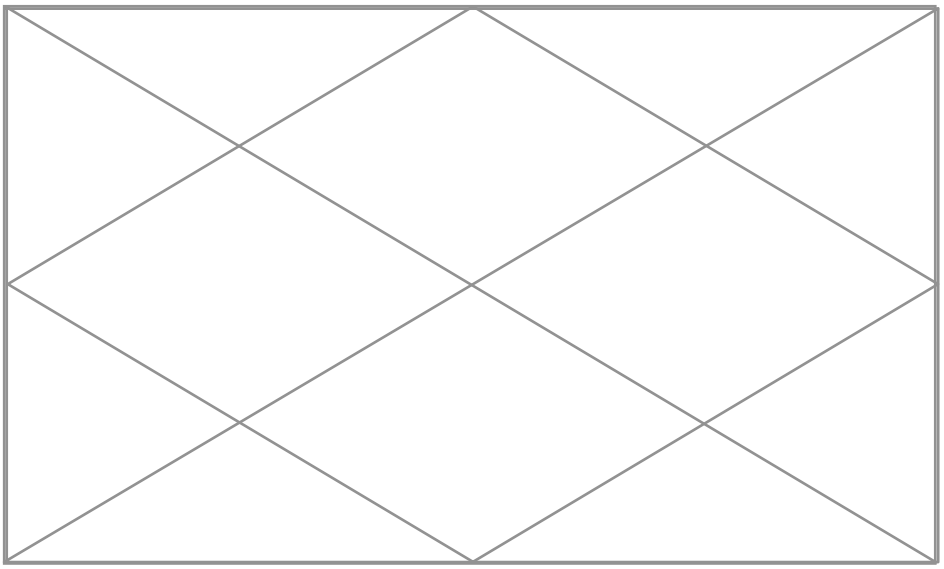

परिशिष्ट

योग - समकालीन व्याख्या

जुलीन लुइस (julenelouis.com) विभिन्न योगों की एक स्पष्ट परिभाषा प्रस्तुत करती है। यहाँ वे आपके के लिए उपलब्ध है:

योग (जुलीन लुइस के अनुसार परिभाषा)		
हिन्दी	**अर्थ**	**गुण**
विष्कुम्भ	विष का प्याला	बाधाओं पर काबू पाने, प्रतिस्पर्धी उद्यम, धन, सफल होने की इच्छा के लिए अच्छा। **अशुभ** जब उद्देश्य पवित्र ना हो, क्योंकि हताशा या दुर्भावना अधिक बाधाओं और अनिश्चित परिणामों को जन्म देगा।
प्रीति	प्यारा	लोकप्रियता हासिल करने के लिए अच्छा है, जब करिश्मा या वाक्पटुता की आवश्यकता होती है। लालसाओं से आसानी से प्रभावित होने के कारण **कम अनुकूल** है।
आयुष्मान	आदरणीय	स्वास्थ्य, दीर्घायु, सफलता और धन के लिए उत्तम है।
सौभाग्य	भाग्यशाली	सभी कार्यों के लिए अच्छा, खुशी और भाग्य लाता है।
शोभन	उज्ज्वल और चमकदार	बुद्धि, सौंदर्य, कामुकता और सम्माननीय साधनों के माध्यम से कमाई से संबंधित चीजों के लिए अच्छा है।
अतिगण्ड	बहुत मजबूत गांठ	**अशुभ** क्योंकि यह विनाशकारी, भ्रामक और दुखदायी है।
सुकर्मा	अच्छे कर्म	कार्रवाई करने, धन, सफलता, उपलब्धि, व्यापार और कला के लिए अच्छा।

योग (जुलीन लुइस के अनुसार परिभाषा)		
धृति	लगातार	जब समर्थन, निरंतरता, वफादारी और धैर्य की जरूरत हो तो अच्छा है। **कम अनुकूल** क्योंकि यह कर सकता है मन में पैदा लालच और दूसरों पर हावी होने की ओर ले जाता है।
शूल	तेज, भेदी	**अशुभ** है क्योंकि यह क्रोध, संघर्ष और पीड़ा देता है।
गंड	गाँठ (बाधा)	**अशुभ** है क्योंकि यह देता है आसक्ति, उच्चारण, लालच, कठोरता और असंतोष।
वृद्धि	बढ़त, वृद्धि	विकास, विस्तार, ज्ञान, भाषण, धन, व्यापार और धंधे के लिए अच्छा है।
ध्रुव	शाश्वत, स्थिर	धन, विद्या और जब स्थिरता, निरंतरता और दीर्घायु की आवश्यकता हो तो अच्छा है। ऐसी चीजों के लिए **अच्छा नहीं** है जिनमें परिवर्तन या आंदोलन की आवश्यकता होगी।
व्याघात	हार, झटका	**अशुभ** क्योंकि यह खतरनाक, क्रोधी, हावी होना और चोट लगना ला सकता है।
हर्षण	आनंदित	प्रसिद्धि, लोकप्रियता, ज्ञान और आनंद के लिए अच्छा है।
वज्र	कठोर, गंभीर	शक्ति, ताकत, बहादुरी, ऊर्जा और प्रेरणा के लिए अच्छा है। **अशुभ** क्योंकि यह कठोर, बेपरवाह और डरावना हो सकता है।
सिद्धि	सफलता, सिद्धि	सभी उपक्रमों में सफलता, पूर्ति, सुरक्षा और उपलब्धि के लिए अच्छा है। आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने और प्राचीन धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ के अध्ययन के लिए विशेष रूप से अच्छा है।
व्यातीपात	विपत्ति, अनादर	**सबसे अशुभ** है क्योंकि यह भ्रामक, अस्पष्ट, कई दिशाओं में चलता है, अनादर पैदा करता है, और अत्यधिक कठिनाइयाँ।
वरीयान	महत्वाकांक्षी, मजबूत	महत्वाकांक्षी उद्यमों के लिए अच्छा है। **कम अनुकूल** क्योंकि यह बना सकता है लालची, अति महत्वाकांक्षी, घमंडी और अहंकारी।
परिघ	लोहे की पट्टी, बैरियर	**अशुभ** क्योंकि यह बाधा, अवरोध और बाधाओं को लाता है।
शिव	शुभ, आनंद	सफलता, सम्मान, आदर, बुद्धि, शांति, आनंद, प्रेम के लिए अच्छा है। विशेष रूप से ज्योतिष, योग, मंत्र, यंत्र और इंद्रियों के नियंत्रण के लिए अच्छा है।

योग (जुलीन लुइस के अनुसार परिभाषा)		
सिद्ध	पूरा, सिद्ध, मनाया	व्यवसाय और सभी उपक्रमों में सफलता के लिए अच्छा है जहाँ गुण, योग्यता और विशेष या कई कौशल की आवश्यकता होती है।
साध्य	न्याय परायण	लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अच्छा है। विशेष रूप से अच्छा जहाँ सत्य, पवित्रता और सदाचार चाहिए।
शुभ	शुभ	धन, सफलता, खुशी, सुंदरता और कृपा के लिए अच्छा है।
शुक्ल	शुद्ध, उज्ज्वल	बुद्धि, भाषण शक्ति, धन, सफलता, और कला के लिए अच्छा है।
ब्रह्म	शाश्वत, बुद्धिमान	ज्ञान, सम्मान, अच्छा निर्णय, दृढ़ता, गुप्त धन और उद्यम जो रचनात्मक, आध्यात्मिक या विद्वतापूर्ण हैं, के लिए अच्छा है।
इन्द्र	उत्कृष्ट, प्रथम, सर्वश्रेष्ठ	धन, सम्मान, शक्ति, प्रतिष्ठा, लोकप्रियता के लिए अच्छा है, और उद्यम जिसमें बुद्धि और लाभ शामिल है।
वैधृति	विभाजन, घातक	**सबसे अशुभ** है क्योंकि यह उत्तेजित, अनम्य, जिद्दी, नाखुश और गलत गठबंधन कराता है।

संवत्सर - वैदिक वर्ष - विस्तृत विवरण

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
प्रभव १ १९२७-१९२८ १९८७-१९८८	प्रभव संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक संकल्पवान होता है या तैयार रहता है सभी प्रकार की वस्तुओं के संग्रह के लिए, उसे कई पुत्रों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, उत्कृष्ट बुद्धि, तथा सभी प्रकार के सुखों का आनंद लेने वाला और दीर्घायु होता है। जातक पारिजात के अनुसार प्रभव वर्ष (१९८७-१९८८ ई.) में जन्म लेने वाला व्यक्ति साहसी, सत्यवादी, सभी गुणों से युक्त, ज्योतिष में निपुण और पवित्र होगा।
विभव २ १९२८-१९२९ १९८८-१९८९	विभव के संवत्सर में जन्मा जातक खाने योग्य वस्तुओं (भोजन, पेय आदि) का आनंद लेता है, अत्यंत सुंदर, बलवान और बुद्धिमान होता है, कला के रहस्यों को जानता है, अपने परिवार में एक राजा के समान होता है (परिवार के मुखिया), अच्छे व्यवहार वाला, सुसंस्कृत और बहुत विद्वान होता है। जातक पारिजात के अनुसार, विभव वर्ष (१९८८-१९८९ ई.) में जन्म लेने वाला व्यक्ति कामी, शुद्ध, सदा प्रसन्न रहने वाला और विलक्षण धन, सम्बन्धी, विद्या और यश वाला होगा। 'विभव' का अर्थ है भव्यता, धूमधाम, ऐश्वर्य (या समृद्ध राज्य)। इसका एक तात्पर्य अत्यधिकता (बहुत अधिक होने की स्थिति) भी है। जातक के उसके 'विभव' के 'संवत्सर' में जन्म लेने पर उसका नाम उस क्षेत्र में प्रथम स्थान पर आता है जिस क्षेत्र को वो अपने कार्यक्षेत्र के रूप में चुनता है। उसके स्वभाव में पूर्णतः कटुता का अभाव होता है क्योंकि कटुता तो चाह या गरीबी से आती है। या जो मिला है उसे खोने का भय भी कटुता को जन्म देता है परंतु 'विभव' अभाव या दरिद्रता का विरोधी है। 'विभव' के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक तर्कसंगत, कट्टरता या कट्टरतावाद से रहित होता है और बिना आडंबर या दिखावे के और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण होता

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	है। एक अन्य ग्रन्थ 'मान सागरी' के अनुसार, विभव' के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक स्त्री के समान स्वभाव वाला, चंचल स्वभाव का, डाकू या तस्कर, धनवान और अन्य लोगों के साथ भलाई करने वाला होता है।
शुक्ल ३ १९२९-१९३० १९८९-१९९०	जिस जातक का जन्म शुक्ल संवत्सर में होता है वह सदैव हर्षित बना रहता है, अत्यंत उदार, उत्तम गुणों से युक्त, उसे पुत्रों तथा पत्नी के सुख का आशीष प्राप्त रहता है, भव्यता और समृद्धि से भरा, सौभाग्य, सीखने और विनम्रता से परिपूर्ण होता है। जातक पारिजात के अनुसार शुक्ल वर्ष (१९८९-१९९० ई.) में जन्म लेने वाला जातक व्यभिचारी, निर्बल, किन्तु उदार और बुद्धिमान होगा। टिप्पणी: शुक्ल के संवत्सर में जन्मा जातक प्राय: साफ मन और पवित्र विचारों वाला होता है। उनका रुझान हमेशा ज्ञान प्राप्ति की ओर रहता है। ऐसे व्यक्ति के आसपास उनका कोई शत्रु नहीं होता है और वह स्वयं भी किसी से शत्रुता नहीं रखते। 'जातक पारिजात' के अनुसार ऐसा जातक बुद्धिमान और समझदार होते हैं, त्याग की भावना रखता है और दूसरे आदमी की पत्नी को अपनी ओर आकर्षित करता है। 'मान सागरी' में 'शुक्ल' के संवत्सर में जन्मा जातक दरिद्रता का शिकार बताया गया है।
प्रमोदुत ४ १९३०-१९३१ १९९०-१९९१	प्रमोद संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक दान देने (या परोपकार करने) वाला, पुत्र प्राप्ति का सुख भोगने वाला, सुख भोगने वाला, अत्यंत सुंदर, सत्यवादी, अच्छे गुणों वाला, कुशल, छलावा करने वाला, दूसरों का भला करने वाला और स्वाभिमानी होता है। जातक पारिजात के अनुसार प्रमोदुत वर्ष (१९९०-१९९१ ई.) में जन्म लेने वाला जातक परामर्श में चतुर, व्यापार में रुचि रखने वाला तथा वाणी में

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	वाचाल होगा। टिप्पणियाँ: 'प्रमोद' शब्द का शाब्दिक अर्थ आनंद, खुशी और आराम है। इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि जिस जातक का जन्म 'प्रमोदुत' के 'संवत्सर' में हुआ है, उसमें उसके नाम (प्रमोद) के अनुरूप गुण होने चाहिए। यहाँ उसके (जातक के) धोखे का अवगुण होने का संकेत दिया गया है। लेकिन यह एक विरोधाभास प्रतीत होता है कि जो व्यक्ति अपनी सच्चाई, सद्गुणों, कुशलता, दूसरों का भला करने के लिए जाना जाता है, उसमें धोखे का अवगुण भी होना चाहिए। कपट और सत्यता वास्तव में एक दूसरे के विरोधी हैं। परंतु यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ऐसा व्यक्ति किसी न किसी रूप में अपना काम निकलवाने में अत्यंत कुशल होगा। 'जातक पारिजात' के लेखक ऐसे व्यक्ति को अपने काम के प्रति अत्यधिक समर्पित होने की बात करते हैं।
५ प्रजोत्पत्ति/ प्रजापति १९३१-१९३२ १९९१-१९९२	प्रजोत्पत्ति के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक को ऐसी पत्नी के पति होने का सौभाग्य प्राप्त होता है जो सद्गुणों से संपन्न, सदा दयालु, अपने परिवार के धर्म का पालन करने वाली, उत्तम स्वभाव वाली, देवता, ब्राह्मण और अपने पति के शिक्षक का सम्मान करने वाली और विनम्र होती है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म प्रजोत्पत्ति वर्ष (१९९१-१९९२ ई.) में होता है वो सदाचारी, प्रचुर, पुत्रों से धनी और शांत स्वभाव का होगा। टिप्पणी: ऐसे जातक में उपरोक्त गुणों के अलावा रचनात्मकता का बहुत महत्वपूर्ण और विशिष्ट गुण होता है। कुछ नया बनाने से जो आनंद मिलता है, उसके कारण व्यक्ति को सांसारिक मामलों से उत्पन्न होने वाले दर्द का अनुभव नहीं होता है। इसलिए उसके जीवन में किसी भी दर्द का प्रवेश लगभग असंभव है।
अंगिरस/ अंगिरा	अंगिरस संवत्सर में जातक सुन्दर, सुखी, समस्त भोगों से युक्त, आत्मगौरव युक्त, मधुरभाषी, अनेक पुत्रों से युक्त, अपने विचारों (योजनाओं) को उचित

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
६ १९३२-१९३३ १९९२-१९९३	तरीके से गुप्त रखने वाला और दीर्घ आयु वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म अंगिरस वर्ष (१९९२-१९९३ ई.) में होता है वो धनी, मेधावी, अनुभवी और सदा दयालु होगा। टिप्पणियाँ: 'मान सागरी' के अनुसार ऐसा जातक धार्मिक संस्कारों को उचित तरीके से करता है, 'धर्म शास्त्रों' में निर्धारित नियमों को जानता है। उसे वेदों का ज्ञान होता है और मेहमानों तथा दोस्तों का सम्मान करता है। 'जातक पारिजात' के लेखक के अनुसार वो राजनीतिज्ञ, दूरदर्शी, कुशल, सदा दयालु और धनवान होता है। साथ ही ऐसा जातक सामान्यतः सात्विक भोजन करना पसंद करता है, अत्यधिक मीठा भोजन करता है, विपरीत लिंग के प्रति अतिरिक्त झुकाव (रुचि) रखता है तथा उसके स्वभाव में निर्भयता होती है।
श्रीमुख ७ १९३३-१९३४ १९९३-१९९४	श्रीमुख के संवत्सर में जिस जातक का जन्म होता है, वह धनवान, वीर, ऊर्जावान, अनेक शास्त्रों को जानने वाला, मित्रों के प्रति स्नेह रखने वाला, सत्यबुद्धि वाला, शारीरिक बल वाला, यशस्वी और अत्यंत उदार होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म श्रीमुख वर्ष (१९९३-१९९४ ई.) में होता है वो अपनी नहीं बल्कि पराई स्त्रियों के लिए तरसता है, तथा ईमानदार और धनी होता है। टिप्पणी:- मानसागरी के अनुसार ऐसा जातक धातु की वस्तुओं का व्यापारी होता है तथा अपने कार्य (वस्तु) की सिद्धि या क्रियान्वयन में छल-कपट का मार्ग अपनाता है। जातक पारिजात का लेखक भी कुछ विरोधाभासी विवरण देते हुए ऐसे जातक के बारे में कथन कहता है कि इस संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक किसी दूसरे पुरुष की पत्नी के साथ संभोग की इच्छा रखने के कारण चंचल मन वाला होता है। इस प्रकार से ऐसे जातक के बारे में विभिन्न ग्रंथों में भिन्न-भिन्न कथनों के होते हुए भी सभी ग्रंथ कम से कम इस तथ्य पर तो एकमत हैं कि श्रीमुख

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	के संवत्सर में जन्मा जातक धनवान, सम्मानित और सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं का भोग करने वाला होता है।
भाव ८ १९३४-१९३५ १९९४-१९९५	जिस जातक का जन्म भाव के संवत्सर में होता है, उसका दिमाग उत्कृष्ट या शानदार होता है, वो बहुत प्रसिद्ध होता है, अच्छे गुणों से संपन्न होता है, दान देने के लिए तैयार रहता है, विनम्र होता है, हमेशा खुश रहता है और बहुतों का प्रिय होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म भाव वर्ष (१९९४-१९९५ ई.) में होता है वो एक तपस्वी, एक राजा-निर्माता, और अपनी विशाल संपत्ति और शक्ति के लिए प्रसिद्ध होगा। टिप्पणियाँ: ऐसे जातक उच्च आचरण वाले माने जाते हैं। उसका हृदय उदारता और बुद्धि से भरा होता है, वह सभी के लिए बड़े प्यार से अपनापन खो देता है। उनके प्रभामंडल (या मनुष्य के सिर के चारों ओर प्रकाश की आभा) में उनके पूरे जीवन की ऊर्जा होती है। जातक पारिजात के लेखक की दृष्टि में ऐसा जातक तपस्वी, राजकीय कार्यों में लगा हुआ, असाधारण रूप से धनवान, यशस्वी और बलवान होता है। मान सागरी के अनुसार ऐसा जातक मांस और मछली का भी शौकीन होता है।
युव / युवा ९ १९३५-१९३६ १९९५-१९९६	'युवा' के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक सुख का प्रत्यक्ष अवतार होता है, अच्छे गुणों से संपन्न होता है, विनम्र, शांत, यथेष्ट या उदार, पांडित्य या विद्या से भरा होता है, दीर्घजीवी होता है। बहुत कठोर और दृढ़ शरीर वाला और संतुष्ट होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म युवा वर्ष (१९९५-१९९६ ई.) में हुआ हो वो लोभी, चंचलचित्त, क्रोधी, आविष्ट करने वाला होगा। महान और प्रभावशाली शक्ति रखने वाला, थोड़ा बीमारियों के प्रति

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	संवेदनशील और उपचार या चिकित्सा कला से परिचित होगा। टिप्पणियाँ: नाम के अनुरूप इस संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक हमेशा स्वस्थ, मजबूत और शक्तिशाली शरीर वाला होता है। लेकिन पता नहीं क्यों 'मानसागरी' में ऐसे जातक को रोग और पीड़ा का विषय बताया गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि वह अपनी पत्नी से परेशान रहता है और उसे पानी से डर लगता है। साथ ही, 'संहिता ग्रन्थों' में कहा गया है कि उनके युवा शरीर होने के कारण अनेक सुन्दर स्त्रियाँ अपना यौवन (अपना शरीर) उन्हें सौंपने को तैयार रहती हैं।
धाता / धातृ १० १९३६-१९३७ १९९६-१९९७	धाता के संवत्सर में जन्म लेने के कारण जातक को सभी प्रकार के अच्छे गुणों का गौरव प्राप्त होता है, अत्यंत सुंदर, अपने गुरु (शिक्षक) के प्रति समर्पित, शिल्प या कला में कुशल, विनम्र और अच्छे व्यवहार वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार धाता वर्ष (१९९६-१९९७ ई.) में जन्म लेने वाला जातक अन्य लोगों की पत्नियों का आदी तथा धूर्त वकील होगा। टिप्पणियाँ: 'धाता' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'विधाता' है (भगवान ब्रह्मा, जो ब्रह्मांड के निर्माता और संचालक है)। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार 'धाता' शब्द त्रिमूर्ति का - 'ब्रह्मा, विष्णु और महेश'- या त्रिदेव का सांकेतिक है। यदि ऐसा जातक शिल्प या कला की दुनिया से जुड़ा है, तो उसके कार्यों में विविध या विभिन्न आयाम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उसके द्वारा किया गया कार्य पूर्णता का आभास या जीवंत समान दिखाई देता है। 'मान सागरी' में 'धाता' के 'संवत्सर' में जन्म के प्रभावों का वर्णन उपरोक्त तरीके से किया गया है। लेकिन इस संवत्सर में जन्म के प्रभाव 'जातक पारिजात' में जैसा कि 'मान सागरी' में ऊपर वर्णित है उसके विपरीत हैं। 'जातक पारिजात' में ऐसे जातक को पराई स्त्री के प्रति आसक्ति या आकर्षण रखने वाला, मूर्ख या मूढ़ तथा विवाद में लिप्त रहने वाला कहा गया है।

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
ईश्वर ११ १९३७-१९३८ १९९७-१९९८	ईश्वर संवत्सर में जिस जातक का जन्म होता है, वह शीघ्र ही क्रोधित होने वाला (अर्थात् गुस्सैल), आनंदमय, गुणों से युक्त, वीर, कुशल, दूरदर्शी, कला में दक्ष और विनम्र होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म ईश्वर वर्ष (१९९७-१९९८ ई.) में होता है वो समृद्ध, स्थिरचित्त और योग्यता को पहचानने वाला होता है। टिप्पणियाँ: इस संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक तभी क्रोधित होता है जब कोई ऐसी बात होती है जो उसके विचार या रुचि के विपरीत होती है, अन्यथा वह सामान्यत: आनंदमय रहता है। 'मान सागरी' में जातक के लिए बहुत ही उत्तम प्रभाव बताए गए हैं जिनका जन्म इस 'संवत्सर' में होता है। ऐसा जातक धनवान होता है, सभी प्रकार के भौतिक सुखों का भोग करने वाला होता है, पशुपालन में रुचि रखता है, लेकिन धर्म की मर्यादा में रहकर ही धन अर्जित करता है। उसके पास असाधारण यौन इच्छा होती है। जातक-पारिजात में ऐसे जातक के लिए दूसरों के गुणों की सराहना या विवेक करने का एक अतिरिक्त गुण भी बताया गया है।
बहुधान्य १२ १९३८-१९३९ १९९८-१९९९	बहुधान्य के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक व्यापार में बुद्धिमान, राजघराने (सरकार) द्वारा सम्मानित, दानशील, अभिमान से पीड़ित, शास्त्रों के आवश्यक स्वभाव (या रहस्य) को जानने वाला और कई प्रकार के धन और अनाज (भौतिक सुख) का स्वामी होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म बहुधान्य वर्ष (१९९८-१९९९ ई.) में होता है वो एक धनी व्यापारी, परोपकारी और कामुक होता है।
प्रमाथी १३ १९३९-१९४० १९९९-२०००	प्रमाथी के संवत्सर में उत्पन्न जातक रथों, ध्वजाओं, छत्रों, घोड़ों से युक्त, शास्त्रों के अध्ययन में लीन, शत्रुओं का संहार करने वाला, राजा का मंत्री तथा वेदों का ज्ञाता होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म प्रमाथी वर्ष (१९९९-२००० ई.) में होता है वो क्रूर, बुरा करने का आदी, उग्र स्वभाव वाला, मित्रविहीन

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	लेकिन सुविधा-सम्पन्नता से रहने वाला होगा। टिप्पणियाँ: 'प्रमाथी' वह पुरुष होता है जिसमें एक योद्धा के गुण होते हैं। ऐसा जातक ताकत के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रवृत्ति रखता है तथा कठोर नीति के अतिरिक्त अन्य किसी नीति का समर्थन नहीं करता। श्लोक में उल्लिखित रथ, ध्वज छत्र और घोड़े इस तथ्य का संकेत है कि 'प्रमाथी' के 'संवत्सर' में जन्म लेने वाला जातक शाही सेना का उच्च अधिकारी होता है। ध्वज और छतरी, शाही चिन्ह का प्रतीक हैं। आधुनिक युग में रथ और घोड़ों को तेज, शक्तिशाली वाहनों, विमानों और मिसाइलों द्वारा बदल दिया गया है, जो आधुनिक युद्ध में उपयोग किये जाते हैं। यहाँ वर्णित गुण उन गुणों के विपरीत हैं जो 'मानसागरी' में बताए गए हैं, 'मानसागरी' के अनुसार ऐसा जातक किसी अन्य व्यक्ति की पत्नी और धन के साथ लगाव (अवैध) रखता है, व्यसनी और जुआरी होता है। हालांकि, 'यवन-जातक' में वर्णित गुण इस प्रकार से हैं: अर्थात, 'प्रमाथी' के संवत्सर में पैदा हुआ जातक एक सेना का सिपाही, राजा का मंत्री, उपहार प्राप्त करने वाला, धनुष (और तीर) धारण करने वाला होता है, जो शास्त्रों को जानता है और धन तथा निंदनीय वस्तु का संचय करता है, दुराचारी या दुर्व्यवहार करनेवाले पुरुषों की संगति में रहता है, दूसरों के लिए काम करता है, कई पत्नियाँ रखता है, मलिन (नीच), आलसी और लोभी (लालची) होता है।
विक्रम १४ १९४०-१९४१ २०००-२००१	विक्रम संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अत्यंत भयानक या भयंकर कर्म करने में लगा रहता है, शत्रु सेना पर आक्रमण करने में कुशल होता है, योद्धा या विजेता होता है, धैर्य और सहनशीलता रखता है, अत्यंत उदार और पराक्रमी या शक्तिशाली होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म विक्रम वर्ष (२०००-२००१ ई.) में हुआ हो वो धनी और पराक्रमी होगा तथा सेना की कमान संभालेगा। टिप्पणियाँ: 'विक्रम' शब्द का अर्थ शक्ति, वीरता या पराक्रम है। इन सद्गुणों

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	के सूचक प्रभावों का उल्लेख 'श्लोक' में किया गया है। ऐसा जातक कठिन से कठिन कार्य को भी करने में सक्षम होता है और इसके लिए वह हमेशा उत्सुक और तैयार भी रहता है। यदि ऐसे व्यक्ति को राजा (या सरकार) के अधीन एक उच्च अधिकारी का पद प्राप्त हो, तो उसकी सेवा का कार्यकाल राजा (या सरकार) की विभिन्न योजनाओं और योजनाओं को क्रियान्वित करने में व्यतीत होता है।
वृषप्रजा / वृष १५ १९४१-१९४२ २००१-२००२	वृष के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अपने द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा करता है, निंदनीय कार्य करता है, दुराचारी या दुष्ट आचरण वाले पुरुषों की संगति में रहता है, दूसरों के लिए काम करता है, कई पत्नियां रखता है, मलिन होता है (आधार), आलसी और कंजूस (लालची) होता है। जातक पारिजात के अनुसार, वर्ष (२००१-२००२ ईस्वी) में जन्म लेने वाला व्यक्ति कंगाल होगा, शर्म की भावना खो देगा और गलत काम करने में लगा रहेगा।
चित्रभानु १६ १९४२-१९४३ २००२-२००३	चित्रभानु के संवत्सर में जन्मा जातक ना ना प्रकार के वस्त्रों और पुष्पों को धारण करने वाला (पहनने वाला) होता है, भिन्न-भिन्न महत्वाकांक्षाओं से भरा हृदय या मन वाला, अच्छे स्वभाव वाला और शिल्प या अन्य कलाओं से संपन्न होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म चित्रभानु वर्ष (२००२-२००३ ई.) में होता है उसमें उस दिन के देवता की ऊर्जा और सुंदरता होती है।
सुभानु १७ १९४३-१९४४ २००३-२००४	सुभानु के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक घुंघराले बाल, सरल स्वभाव, सुंदर रूप (शरीर) वाला, शत्रु पक्ष का विजेता होता है, बुद्धिमान, विनम्र, मुस्कुराता हुआ हर्षित चेहरा है और वैभव या भव्यता से संपन्न होता है । जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म सुभानु वर्ष (२००३-२००४ ई.) में होता है उसमें उसके गोत्र या जाति की विद्या, आचरण और सदाचार की विशेषता होगी।
तारण	तारण के संवत्सर में जन्म हो तो जातक छली या धूर्त होता है लेकिन वीर

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
१८ १९४४-१९४५ २००४-२००५	(योद्धा या विजेता) या वीर, बेचैन, कला और शिल्प में पारंगत (कुशल), अत्यंत कठोर और क्रूर, कर्मों का कर्ता होता है। वे वस्तुएँ जो द्वेष की वस्तु हैं, उन्हीं वस्तुओं का उपभोग करती हैं जो उसके द्वारा प्राप्त की जाती हैं और धन से संपन्न होती हैं। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म तारण वर्ष (२००४-२००५ ई.) में होता है वो अत्यधिक धन और बल का अधिकारी होगा और एक दार्शनिक होगा। टिप्पणियाँ: कविता में यौगिक शब्द बहुत अर्थ से भरा है। यहाँ पंडित धुन्धी राज कहना चाहते हैं कि ऐसा जातक धनवान होते हुए भी वस्तुओं का संग्रह करने वाला नहीं होता; उसमें प्राप्त वस्तुओं को ग्रहण करने की प्रवृत्ति होती है। मान सागरी के अनुसार ऐसा जातक लोकप्रिय होता है, सभी धर्मों के लोगों द्वारा बहिष्कृत किया जाता है, अर्थात् धर्म के प्रति नास्तिक प्रवृत्ति वाला होता है, राजकीय सेवा में कार्यरत होता है और इसी माध्यम से धन कमाता है।
पार्थिव १९ १९४५-१९४६ २००५-२००६	पार्थिव के संवत्सर में जन्मा जातक अपने धर्म के संस्कार (श्रद्धा से) करता है, उत्कृष्ट शास्त्रों में पारंगत (सीखा) होता है, कला, कामुक या आनंद के क्षेत्र में निपुण (कुशल) होता है। प्यार करने वाला और अपने परिवार का मुखिया होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म पार्थिव वर्ष (२००५-२००६ ई.) में होता है वो अपनी समृद्धि और खुशियाँ के लिए बेजोड़ राजा समान होगा। टिप्पणियाँ: पार्थिव के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अपने देश के रीति-रिवाजों और परंपराओं को पूरा करने के लिए बहुत जागरूक होता है। यह उसके स्वभाव के विपरीत है कि वह इस संबंध में थोड़ी भी ढिलाई करे। वह परंपरा का अनुयायी होता है और उसका आचरण शास्त्रों के अनुरूप होता है। नवीनता के प्रति उसके मन में रत्ती भर भी आकर्षण नहीं होता है।

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
अव्यय/व्यय २० १९४६-१९४७ २००६-२००७	'व्यय' के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक सांसारिक सुखों को भोगने में अत्यधिक मग्न, व्यसनों (जैसे शराब) के अधीन, किसी से भीख मांगने में निर्भीक रहता है, अर्थात बिना किसी झिझक के भीख माँगने के लिए तैयार रहता है और इसलिए हमेशा कर्ज में डूबा हुआ रहता है, बेचैन रहता है और अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति रखता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म व्यय वर्ष में हुआ हो (२००६-२००७ ई.) कामी, कायर, अनैतिक, अपनी संपत्ति को दांव पर लगाने वाला होगा। जुआ, और दुष्टता का आदी होगा। टिप्पणियाँ: ऐसे जातक में कठिन समय की जरूरतों के लिए धन संचय (संग्रह) करने की प्रवृत्ति नहीं होती है। बेशर्मी की हद तक भी क़र्ज़ माँगने की इनकी आदत होती है और ज़्यादा ख़र्च करने की आदत के कारण ये हमेशा क़र्ज़ में डूबे रहते हैं।
सर्वजीत २१ १९४७-१९४८ २००७-२००८	सर्वजीत के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक राजा द्वारा सम्मानित होता है, हमेशा महान समारोह मनाता है और शुद्ध होता है। उनका विशाल शरीर होता है। वह राजा के साथ-साथ उसके शत्रुओं पर भी विजयी होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म सर्वजीत वर्ष में होता है (२००७-२००८ ईस्वी) वो वाक्पटु, महान शारीरिक शक्ति से युक्त, पवित्र शास्त्रों में पारंगत, सदाचारी और चीजों की प्रकृति एवं वास्तविकता से परिचित होता है। टिप्पणियाँ: विशाल शरीर का अर्थ है कि उसके शरीर के अंग आकार में अपेक्षाकृत बड़े होते हैं। संहिता ग्रन्थों के अनुसार ऐसा जातक ज्ञानी और बुद्धिमान होता है, लेकिन स्वाभिमानी होता है। वह हमेशा अपने से कमजोर लोगों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने की सोचता है।
सर्वधारी २२ १९४८-१९४९ २००८-२००९	यदि जन्म 'सर्वधारी' के संवत्सर में होता है तो जातक नौकर-चाकरों के समूह का स्वामी होता है और उसे कई प्रकार के सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। वह सौन्दर्य से सम्पन्न होता है, मीठा खाना पसंद करता है, धैर्य और सहनशीलता रखता है और परंपराओं और रूढ़ियों का पालन (पालन) करता

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म सर्वधारी वर्ष (२००८-२००९ ई.) में होता है वो धनवान, कला में पारंगत और राजाओं का प्रिय होगा।
विरोधी २३ १९४९-१९५० २००९-२०१०	विरोधी के संवत्सर में जन्म लेने वाला वाक्पटु होता है, विदेश में भ्रमण करता है, अपने लोगों (उनके परिवार के लोग) को सुख-खुशी नहीं देता है। बेहद धोखेबाज या चालाक होता है। तथा दूसरे लोगों के साथ संबंध या मित्रता विकसित नहीं करता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म विरोधी वर्ष में हुआ हो (२००९-२०१० ई.) वो पीड़ित होगा, दुष्टों के संग में सुखी तथा पाप कर्मों में आसक्त एवं क्रूर होगा।
विकृति २४ १९५०-१९५१ २०१०-२०११	जिस जातक का जन्म 'विकृति' के संवत्सर में होता है, वह दरिद्र होता है, निश्चित रूप से भयानक दिखता है, लंबा शरीर होता है, घमंडी होता है और उसमें ज्ञान और बुद्धि का अभाव होता है और वह किसी से मित्रता नहीं करता है। जातक पारिजात के अनुसार, 'विकृति' वर्ष (२०१०-२०११ ईस्वी) में जन्म लेने वाला व्यक्ति छल-कपट, प्रेम-रोग, और अपने मन को जादू के फार्मूले और समारोहों में उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग के लिए समर्पित करेगा।
खर २५ १९५१-१९५२ २०११-२०१२	जिसका जन्म 'खर' के संवत्सर में हुआ है, वह कामुक होता है, उसके शरीर में मलिनता होती है, बिना किसी कारण या प्रयोजन के बहुत कठोर और ऊँचे शब्दों का बोलने वाला झगड़ालू, निर्लज्ज और विशाल शरीर वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म खर वर्ष में हुआ हो (२०११-२०१२ ई.) अनाकर्षक, निकम्मा, वाणी में उदास, पापी और शरारती होगा।
नंदन २६ १९५२-१९५३ २०१२-२०१३	नंदन के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक पानी की टंकी बनवाता है, कुआं खोदता है और धर्मशाला बनवाता है। वह हमेशा भिक्षा के रूप में अनाज दान करने में रुचि रखता है। उसका मन पवित्र होता है और वो खुश

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	रहता है क्योंकि उसके पास पत्नी और बेटे होते हैं। जातक पारिजात के अनुसार, नंदन वर्ष (२०१२-२०१३ ईस्वी) में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी को प्रसन्न करेगा, राजाओं के कृपा का आनंद लेगा और शास्त्र में पवित्र भजनों के अर्थ से परिचित होगा।
विजय २७ १९५३-१९५४ २०१३-२०१४	विजय नाम के संवत्सर में जिस जातक का जन्म होता है, वह युद्ध में शौर्य और पराक्रम दिखाने वाला, अच्छे आचरण वाला, राजा द्वारा सम्मानित, उत्कृष्ट वक्ता, उदार, दयालु और अपने शत्रु का संहार करने वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार, विजय वर्ष (२०१३-२०१४ ईस्वी) में जन्म लेने वाला व्यक्ति सदाचारी होगा, और वास्तविक उत्कृष्टता में समृद्ध होगा। टिप्पणियाँ: ऐसा जातक अपने लक्ष्यों, उद्देश्यों और महत्वाकांक्षाओं के प्रति बहुत जागरूक होता है । वह इन्हें किसी भी तरह से प्राप्त करता है, चाहे इसके लिए उसे कोई भी उपाय अपनाना पड़े। वह अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए बहुत क्रूर तरीके और चतुर युक्ति का इस्तेमाल करने में विश्वास रखता है, भले ही इससे किसी का नुकसान हो जाए तो भी वह परवाह नहीं करता। 'जातक पारिजात' के अनुसार ऐसा जातक धार्मिक, सत्यवादी और धनवान होता है। और 'मान सागरी' का लेखक भी 'विजय' के संवत्सर में जन्म लेने वाले जातक की प्रशंसा करते हैं। वो ध्यान दिलाता है। "ऐसा जातक यश, दीर्घ आयु, सम्मान, सुख, तथा अपने सभी प्रयासों में सफलता प्राप्त करता है, युद्ध में नायक या विजेता होता है और अपने शत्रु से अजेय रहता है, अर्थात ऐसा जातक युद्ध में विजय प्राप्त करता है। पत्नी से सुख प्राप्त करता है, मित्र और शत्रु के कारण शुभ और अशुभ प्रभाव प्राप्त करता है और व्यापार में शामिल होता है।
	जय के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक विद्वानों (धर्म के ज्ञाता) के

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
जय २८ १९५४-१९५५ २०१४-२०१५	साथ शास्त्रार्थ (सैद्धांतिक बहस और चर्चा) करने वाला होता है, दुनिया में सम्मानित होता है, यथेष्ट और उदार होता है, शत्रुओं का नाश करने वाला होता है, जीत पाने की लालसा या इच्छा रखता है, सांसारिक या कामुक आनंद में तल्लीन रहता है और उसका व्यक्तित्व बहुत ही देदीप्यमान या चमकदार होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म जय वर्ष में हुआ हो (२०१४-२०१५ ई.) या तो वो राजा होगा या राजा के समान होगा। टिप्पणियाँ: ऐसा व्यक्ति हर तरह के सुख और आराम से संपन्न होता है। वह समृद्धि के बीच पैदा होता है, अपना पूरा जीवन समृद्धि में व्यतीत करता है और इस दुनिया को छोड़ते वक़्त भी समृद्ध ही रहता है। उसका जीवन सभी प्रकार के भोग के साधनों से भरपूर होता है। सफलता का गर्व, अपनी इच्छाओं की पूर्ति से उत्पन्न होने वाली शांति, ज्ञान की गरिमा और पूर्णता या पूर्णता की भावना, यह सब उसके चेहरे पर सहज ही अनुभव किया (देखा) जा सकता है।
मन्मथ २९ १९५५-१९५६ २०१५-२०१६	मन्मथ के संवत्सर में जन्म हो तो जातक विशेष प्रकार के आभूषणों से विभूषित, स्त्री के साथ कामुक सुख प्राप्त करने वाला, मधुरभाषी, हमेशा गायन और नृत्य में लगा रहता है, और कामुक (इंद्रियों का सुख का आनंद लेने वाला) स्वभाव वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार मन्मथ वर्ष (२०१५-२०१६ ई.) में जन्म लेने वाले जातक को विषय भोग की लालसा होगी और वह अपने शत्रुओं पर विजयी होगा। टिप्पणियाँ: 'मनमथ' प्रेम (कामदेव) या यौन इच्छा के देवता हैं। हमारे 'पुराणों' में 'कामदेव' (मन्मथ) को नृत्य, संगीत आदि कलाओं का देवता माना गया है। जैसा कि कहा गया है, 'मन्मथ' के 'संवत्सर' में जन्म लेने वाला जातक सुंदर, नाजुक, कामुकता (यौन इच्छा की संतुष्टि) से युक्त होता है, शांत या सौम्य, मधुरभाषी और आभूषणों का प्रेमी होता है। उनका काम करने का तरीका (उनकी शैली) बेहद खूबसूरत होती है। वह सौन्दर्य के

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	प्रेमी होते हैं। उनमें सौंदर्य बोध बेहतरीन होता है। वह स्वाभाविक रूप से कामुक होते हैं। अपनी शालीनता या शील, शिष्टाचार (उचित या अच्छे आचरण), मिलनसारिता, संतुलित विचारों, ज्ञान और बुद्धि, समझ और विवेक या आलोचनात्मक दृष्टिकोण के कारण वह समाज में सम्मान प्राप्त करता है। ऐसा जातक किसी भी अभाव (या गरीबी) के अधीन नहीं होता है।
दुर्मुख/दुर्मुखी ३० १९५६-१९५७ २०१६-२०१७	दुर्मुखी के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक क्रूर, कपटी स्वभाव का, निंदनीय या निंदनीय मानसिकता से संपन्न, कंजूस, टेढ़े मुंह वाला और घुमावदार हाथ-पैर वाला, पाप में डूबा रहने वाला, दूसरों के विरुद्ध विचार रखने वाला और बेहद खलनायक और दुष्ट होता है। जातक पारिजात के अनुसार दुर्मुखी वर्ष (२०१६-२०१७ ई.) में जन्म लेने वाला व्यक्ति सदाचार और धन से रहित तथा अनैतिक होगा। टिप्पणियाँ: शब्द "दुर्मुख' का अर्थ है 'जिसका चेहरा बदसूरत है'। इसी कारण से ऐसे जातक को घुमावदार मुंह और टेढ़े हाथ-पैर वाला बताया गया है। इसके अतिरिक्त बौद्धिक स्तर पर भी वक्रता या कुटिलता होती है। यह लगभग असंभव है कि ऐसा जातक उन विचारों और योजनाओं से सहमत हो जो सभी द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।
हेविळंबि / हेमलंबी ३१ १९५७-१९५८ २०१७-२०१८	यदि जन्म 'हेविलंबी' या 'हेमलंबी' के संवत्सर में हो, तो जातक घोड़े से, वाहन का साधन जो महंगा होता है, तेज गति वाला चौपहिया, सोना, कपड़े, धन और धान्य और रत्न से संपन्न होता है। उसे एक अच्छी पत्नी और पुत्रों का सुख प्राप्त होता है तथा उसकि प्रवृत्ति सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं (आराम और सुविधा के लिए) को इकट्ठा करने की होती है। जातक पारिजात के अनुसार हेमलंबी (२०१७-२०१८ ई.) वर्ष में जन्म लेने वाला जातक दुराग्रही (अपनी बात पर अनुचित तरीके से अड़ा रहने वाला;

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	हठी; ज़िद्दी) होगा तथा कृषि तथा अन्य कार्यों में लगन से लगा रहेगा। टिप्पणियाँ: हिंदी शब्द 'हेमा' 'सुवर्ण' या सोने का पर्याय है। ऐसे जातक सामान्यत: सुख-सुविधाओं के साधक होते हैं। उनके पास भौतिकवादी दृष्टिकोण होता है और वे सांसारिक मामलों में बहुत सफल होते हैं। वे युवावस्था से ही समृद्धि की ओर बढ़ते जाते हैं। उनके पास अपने घरों में महंगी से महंगी चीज लाने की भी प्रवृत्ति होती है। वे अपने आराम और खुशी को प्रमुख महत्व देते हैं। ऐसा व्यक्ति अपनी संपन्नता या ऐश्वर्य के कारण ही समाज में सम्मान पाता है। अन्यथा वह बहुत कंजूस होता है। जब दूसरों को उसकी मदद की आवश्यकता होती है तब ऐसा व्यक्ति मदद करने से कतराता है। जातक पारिजात के लेखक के अनुसार ऐसा जातक पवित्र और स्वच्छ, शांत, अत्यंत निपुण या कुशल, अपने गुणों के कारण हर जगह सम्मानित, परोपकारी, धार्मिक बहस या चर्चा में व्यस्त रहने वाला और एक बदसूरत चेहरे वाली पत्नी का पति होता है। ऐसा जातक दुष्ट आत्मा का होता है तथा कृषि आदि कार्य करने की इच्छा रखता है। लेकिन 'जातक पारिजात' के लेखक के अनुसार ऐसा जातक गुण, धन और अच्छे आचरण से रहित होता है।
विलंबी ३२ १९५८-१९५९ २०१८-२०१९	विलम्बी के संवत्सर में जिस जातक का जन्म होता है वह कपटी, अत्यंत लोभी या लालची, आलसी, कफयुक्त (अर्थात् उसका प्रधान हास्य कफ होता है), दुर्बल, भाग्यवादी और अकारण बोलने वाला होता है। सेवा करने वाला, अपनी पत्नी से पराजित, संतुष्ट, अपने विचार गुप्त रखने वाला और चंचल स्वभाव का होता है। जातक पारिजात के अनुसार, विलम्बी वर्ष (२०१८-२०१९ ईस्वी) में जन्म लेने वाला व्यक्ति समृद्ध, ब्राह्मण समुदाय का सहारा लेने वाला और निस्वार्थ रूप से परोपकारी होगा।
विकारी ३३ १९५९-१९६० २०१९-२०२०	विकारी के संवत्सर में जन्मा जातक अत्यंत हठी (अड़ियल), सभी कलाओं में कुशल या अनुभवी, संग्रह करने की प्रवृत्ति रखता है। वो चंचल मन, कपटी या धूर्त होता है, बहुत अधिक और बिना उद्देश्य के

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	बोलने की आदत होती है और अपने दोस्तों पर विश्वास नहीं करता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म विकारी वर्ष (२०१९-२०२० ई.) में होता है वो रुग्ण, कायर, दरिद्र, असंयमी और नीच स्वभाव का होता है।
शार्वरी ३४ १९६०-१९६१ २०२०-२०२१	शार्वरी संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक व्यापार कार्यों में दक्ष या अनुभवी होता है, कामुक या आनंदप्रिय होता है, वो अपने मित्रों के अनुरूप बनने या उनके अनुरूप कार्य करने में नहीं लगा रहता है, बल्कि विभिन्न विषयों तथा शाखाओं में ज्ञान प्राप्त करने में लगा रहता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म शार्वरी वर्ष (२०२०-२०२१ ई.) में होता है उसके पास धन और भोग-विलासता की अधिकता होगी तथा वह हंसमुख, ईमानदार और सदाचारी होगी।
प्लव ३५ १९६१-१९६२ २०२१-२०२२	प्लाव के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अत्यधिक कामुक (अत्यधिक यौन इच्छा रखने वाला), धनवान, अपने सेवा करने के गुण के कारण सम्मान प्राप्त करता है, पत्नी से पराजित, सन्तुष्ट, अपने विचार गुप्त रखने वाला और चंचल स्वभाव का होता है। जातक पारिजात के अनुसार, प्लाव वर्ष (२०२१-२०२२ ई.) में जन्म लेने वाला व्यक्ति शान्त, उदार, दयालु, वीर और अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित होता है।
शुभकृत ३६ १९६२-१९६३ २०२२-२०२३	शुभकृत के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक सौभाग्य, विद्या, शिष्टाचार या विनम्रता और उत्कृष्ट पुण्य कर्मों से संपन्न होता है, दीर्घजीवी होता है और उसके कई पुत्र और उसके पास बहुत धन और संपत्ति होती है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म शुभक्रुथ वर्ष (२०२२-२०२३ ई.) में होता है वो महिलाओं को ठगेगा, लेकिन ज्ञानी, सुंदर और बुद्धिमान होगा। टिप्पणियाँ: 'शुभकृत' को 'शुभा' भी कहा जा सकता है। 'शुभा' का अर्थ है शुभ या अच्छा और 'शुभकृत' का अर्थ है शुभ या अच्छाई के कर्म करना।

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	ऐसा जातक धार्मिक विचारों वाला होता है तथा धार्मिक एवं पुण्य कर्म भी करता है। इसके अलावा, वह अपने द्वारा किए जाने वाले कार्य में दक्ष या कुशल होता है।
शोभकृत ३७ १९६३-१९६४ २०२३-२०२४	शोभकृत के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक हर क्षेत्र में प्रगति करता है। वह देखने में सुंदर, उत्तम गुणों वाला, दयालु और अच्छे कर्म करने वाला होता है। विशेष रूप से उसे जीवन संग्राम में विजय अथवा सफलता प्राप्त होती है। वह प्रतिभा, शिष्टाचार या विनम्रता से संपन्न होता है, उसकी आँखें सुंदर होती हैं और वह कुशल होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म शोभकृत वर्ष (२०२३-२०२४ ई.) में होता है वो बुद्धिमान, राज गुणों से युक्त और सीखने योग्य गतिविधियों का शौकीन होता है। टिप्पणियाँ: इस 'संवत्सर' को 'शोभन' के नाम से भी जाना जाता है। 'शोभन' और 'शोभकृत' शब्दों का अर्थ एक ही है, क्योंकि दोनों का अर्थ सुंदर, उत्कृष्ट और शुभ है। सौंदर्य और प्रतिभा शब्द इसके पर्यायवाची हैं। जातक पारिजात के लेखक ने 'शोभक्रत' के स्थान पर 'शोभकृत' शब्द का प्रयोग किया है। 'शोभकृत' शब्द का अर्थ शुभ रचना है। यहाँ भी इसके प्रभाव को विद्वान, राजा, सदाचारी और विद्या और शिक्षा से संपन्न बताया गया है।
क्रोधी ३८ १९६४-१९६५ २०२४-२०२५	क्रोधी संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक क्रूर-नेत्र वाला, क्रूर स्वभाव वाला, अपनी पत्नी के प्रति अत्यधिक प्रेम रखने वाला और उसे अपनी पत्नी बहुत प्रिय होती है, अत्यंत दंभी या अहंकारी, दूसरों के मार्ग में बाधा डालने वाला और उग्र स्वभाव का क्रोधित व्यक्ति होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म क्रोधी वर्ष (२०२४-२०२५ ई.) में हुआ हो वो व्यभिचारी, कुमार्ग में आसक्त, धूर्त और गुस्सैल स्वभाव का होगा। टिप्पणियाँ: क्रूर-नेत्र शब्द का एक अर्थ पापी आँख (महिलाओं पर) डालने के रूप में लिया जाना चाहिए। 'मान सागरी' में ऐसे जातक को विज्ञान में रुचि रखने वाला और जड़ी-बूटी संग्रह करने वाला बताया गया है।

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
विश्वावसु ३९ १९६५-१९६६ २०२५-२०२६	जिस जातक का जन्म 'विश्वावसु' के 'संवत्सर' में हुआ है, उसे एक गुणी पत्नी और पुत्र का आशीर्वाद प्राप्त होता है, अत्यधिक उदार, उत्कृष्ट आचरण, अत्यधिक धैर्य और सहनशीलता रखने वाला, मीठे खाद्य पदार्थों को पसंद करने वाला और सभी गुणों से संपन्न होता है। जातक पारिजात के अनुसार, विश्वावसु (२०२५-२०२६ ईस्वी) में जन्म लेने वाले व्यक्ति में उच्च सम्मान की भावना होगी, हास्य का शौकीन होगा और नैतिक मूल्यों के धनी लोगों की प्रशंसा करेगा।
पराभव ४० १९६६-१९६७ २०२६-२०२७	जिसका जन्म परभाव के संवत्सर में हुआ है, वह मुश्किल से ही धन संचय कर पाता है, कटु या चुभने वाले वचन बोलने वाला होता है, अच्छे आचरण से रहित और मूर्ख होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म परभाव वर्ष (२०२६-२०२७ ई.) में होता है वो दुष्टता में लिप्त रहेगा और अपने कुल का नाश करने वाला सिद्ध होगा।
प्लवंग ४१ १९६७-१९६८ २०२७-२०२८	प्लवंग संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अस्थिर या चंचल मन वाला, अच्छे कर्म करने की इच्छा नहीं रखने वाला, धोखेबाज, अच्छे आचरण से रहित, विचारहीन और कमजोर शरीर वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार, प्लवंगा (२०२७-२०२८ ईस्वी) में जन्म लेने वाला व्यक्ति कामी, रिश्तेदारों से प्यार करने वाला, बच्चे से पक्षपात करने वाला तथा मूढ़मति होगा।
कीलक ४२ १९६८-१९६९ २०२८-२०२९	कीलक संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक मध्यम या औसत सुन्दरता का होता है (अर्थात् वह न तो बहुत अधिक सुन्दर होता है और न ही बहुत अधिक कुरूप या बदसूरत होता है।) वो मधुरभाषी, दयालु, जल से प्रीति रखने वाला, बहुत मोटे पैर वाला, सुंदर माथा, मजबूत और अपने शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म कीलक वर्ष (२०२८-२०२९ ई.) में होता है वो स्वयं को ईश्वरीय आराधना के प्रति समर्पित कर देगा

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
	और अत्यधिक भाग्यशाली और बहादुर होगा।
सौम्य ४३ १९६९-१९७० २०२९-२०३०	यदि जन्म सौम्य के संवत्सर में हो, तो जातक पंडित या विद्वान, धनी, बहुत कामुक (या सांसारिक सुखों में संगलग्न), अपने देवता या भगवान और अपने अतिथि के लिए प्यार करने वाला होता है। शुद्ध, सम्पन्न होता है, सात्विक आदतों और कमजोर शरीर वाला होता है , और व्यापार के माध्यम से प्रतिष्ठा कमाने वाला होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म सौम्य वर्ष (२०२९-२०३० ई.) में हुआ हो वो शांत, सर्वत्र लोकप्रिय, अत्यधिक धनवान और दृढचित्त वाला होगा।
साधारण ४४ १९७०-१९७१ २०३०-२०३१	साधरण के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक इधर-उधर घूमने का शौकीन, लेखन में प्रतिभाशाली, सही-गलत की समझ वाला या विवेकशील, क्रोध करने वाला, पवित्र और सांसारिक सुखों से विमुख होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म साधरण वर्ष (२०३०-२०३१ ई.) में होता है वो सीखने की विभिन्न शाखाओं में पारंगत होगा और एक अच्छी समझ रखने वाला होगा।
विरोधकृत ४५ १९७१-१९७२ २०३१-२०३२	जिस जातक का जन्म 'विरोधीकृत' के संवत्सर में आता है, वह भगवान शिव की पूजा में तल्लीन रहता है, क्रोधित होता है, झगड़ा करता है या बहुतों का विरोध करता है और अपने पिता की उपेक्षा करता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म विरोधीकृत वर्ष (२०३१-२०३२ ई.) में होता है वो भोला, क्रोधी, कंजूस और भटकने वाला होगा।
परिधावी ४६ १९७२-१९७३ २०३२-२०३३	परिधावी के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक विद्वान होता है। विनम्र, कला के क्षेत्र में निपुण, बुद्धिमान और राजा के दरबार में सम्मानित होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म परिधावी (२०३२-२०३३ ई.) वर्ष में होता है वो दुराचारी, वाणी में कठोर और धनवान होगा।
प्रमादी/प्रमादीच	'प्रमादीच' के संवत्सर में जन्म लेने वाला व्यक्ति दुष्ट या दुष्ट, अभिमानी,

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
४७ १९७३-१९७४ २०३३-२०३४	झगड़ालू, लालची या लोभी होता है, उसे अपने लोगों के प्रति बहुत प्रेम होता है, दरिद्र होना ही उसकी नियति होती है, मूढ़मति होता है, और ऐसे कर्मों का कर्ता होता है जो निंदनीय या दोष के योग्य हैं। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म प्रमादीचा वर्ष (२०३३-२०३४ ई.) में होता है वो अपने संबंधियों से विरक्त होगा, और दूसरों की स्त्रियों के लिए लालायित रहेगा।
आनंद ४८ १९७४-१९७५ २०३४-२०३५	आनंद के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अनेक पत्नियाँ रखने वाला, कुशल, अत्यधिक निपुण, सदैव पुत्र प्राप्ति का सुख भोगने वाला, विद्वान, आभार या कृतज्ञता का भाव रखने वाला, विनम्र और यथेष्ट या उदार होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म आनंद वर्ष (२०३४-२०३५ ई.) में होता है वो आनंदमय स्वभाव का होगा, पारंपरिक सिद्धांतों और पवित्र शास्त्रों के अध्ययन के लिए समर्पित होगा और सभी चीजों की वास्तविक प्रकृति से परिचित होगा।
राक्षस ४९ १९७५-१९७६ २०३५-२०३६	जिस जातक का जन्म 'राक्षस' के 'संवत्सर' में होता है, वह अत्यंत क्रूर या पापी, भर्त्सना करने योग्य या निंदनीय कर्म करने वाला होता है। झगड़ालू, धर्म और विचारहीन, क्रूर परंतु साहसिक भी होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म राक्षस वर्ष(२०३५-२०३६ ईस्वी) में होता है वो पापी होगा, व्यर्थ की बातों में लिप्त रहेगा, और पुण्यात्माओं को चोट पहुँचाएगा।
नल/अनल ५० १९७६-१९७७ २०३६-२०३७	जो जातक 'नल' के संवत्सर में पैदा हुआ होता है उसे अच्छी समझ (बुद्धि) जन्म से ही उपहार में प्राप्त होती है, वो पानी में (या पानी से प्राप्त) उत्पादित वस्तुओं के व्यापार में निपुण या विशेषज्ञ होता है, अच्छे चरित्र का, थोड़ा धनवान, बेचैन और बहुतों का समर्थक होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म नल वर्ष (२०३६-२०३७ ई.) में होता है वो अनेक उदार गुणों से सम्पन्न, दानी, शान्त और अच्छे व्यवहार का होगा।
पिंगल	पिंगला नाम के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक पीले रंग की आंखों

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
५१ १९७७-१९७८ २०३७-२०३८	वाला, निंदनीय या भर्त्सना करने योग्य कर्मों का कर्ता, उग्र या अतिवादी प्रकृति का, बेचैन, भव्यता या ऐश्वर्य वाला, उदार या उपकार करने वाला, मूर्ख और कठोर बोलने वाला (अर्थात कटु वचन बोलने वाला), खुश रहने वाला, संग्राम में यश पाता है, रूपवान होता है, राजा का मन्त्री होता है, कई लोगों द्वारा सम्मानित किया जाता है और योग्य या सक्षम (शक्तिशाली) होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म पिंगला वर्ष (२०३७-२०३८ ई.) में हुआ हो वो मन को वश में कर तपस्या में लीन रहने वाला संत होगा।
कालयुक्त/कालयुक्ति ५२ १९७८-१९७९ २०३८-२०३९	कालयुक्ति नाम के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक बिना किसी उद्देश्य के बहुत अधिक बोलने से आनंद प्राप्त करता है, संपन्न होता है, दोषयुक्त (आधार) बुद्धि, भाग्य से रहित, झगड़ा होने पर यम (मृत्यु के देवता) अवतार लेते हैं और कमजोर शरीर वाले होते हैं। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म कालयुक्ति वर्ष (२०३८-२०३९ ई.) में होता है वो एक ज्योतिषी बनेगा और उसके पास भाग्य, भोग और परोपकार के कार्य होंगे।
सिद्धार्थी ५३ १९७९-१९८० २०३९-२०४०	सिद्धार्थी के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक दयालु या उदार हृदय वाला, खुश रहने वाला, युद्ध में यश प्राप्त करने वाला, रूपवान, राजा का मंत्री, बहुतों से सम्मानित और योग्य या सक्षम (ताकतवर) होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म सिद्धार्थी वर्ष (२०३९-२०४० ई.) में होता है वो अपने उपक्रमों में सफल होंगे, आध्यात्मिक गुरुओं और देवताओं के प्रति श्रद्धावान बनेंगे और बुद्धिमान होंगे।
रौद्र / रौद्री ५४ १९८०-१९८१ २०४०-२०४१	रौद्री के संवत्सर में जन्मा जातक भयानक रूप का होता है। पशुपालन करता है, दूसरों की निन्दा करता है, अत्यधिक कपटी होता है, बदनाम होता है, शातिर दिल का और बहुत भयंकर होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म रौद्री वर्ष (२०४०-२०४१ ई.) में होता है वो कुटिल, विकृत, अभिमानी और दुष्ट होगा।

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
दुर्मति ५५ १९८१-१९८२ २०४१-२०४२	'दुरमती' के संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अपनी बात रखने का गौरव रखता है, निरंतर दुखी रहता है, कामुक होता है या कामवासना का सुख भोगने वाला होता है, नीच कर्म करने में लगा हुआ और मूर्ख या अज्ञानी होता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म दुर्मति वर्ष (२०४१-२०४२ ई.) में होता है वो कामी, मंदबुद्धि, क्लेशों से व्याकुल और नीच बुद्धि वाली होगा।
दुन्दुभी ५६ १९८२-१९८३ २०४२-२०४३	जन्म के समय दुन्दुभी का संवत्सर हो तो जातक हमेशा राजा से सम्मान प्राप्त करने वाला होता है, हाथी, घोड़े, जमीन और सोना से संपन्न रहता है, तथा नृत्य और गीतों का प्रेमी होता है। जातक पारिजात के अनुसार, वर्ष दुन्दुभी (२०४२-२०४३ ईस्वी) में जन्म लेने वाले व्यक्ति के पास बड़ी जांघों, पेट, बाहों और सिर का अलग सा ही दिखने वाला शारीरिक ढांचा होगा और वह खुश रहेगा।
रूधिरोद्गारी ५७ १९८३-१९८४ २०४३-२०४४	रूधिरोद्गारी के संवत्सर में जन्म लेने वाले व्यक्ति की आँखों का रंग लाल होता है, शायद 'कमला' (पीलिया) की बीमारी के कारण कमजोर शरीर वाला, अत्यधिक उग्र स्वभाव या अत्यधिक क्रोधी होता है, उसके हाथ-पैर के नाखून खराब होते हैं और किसी हथियार से जख्मी हो जाता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म वर्ष रूधिरोद्गारी (२०४३-२०४४ ई.) में होता है वो बुद्धिमान, सत्यवादी, सुखी और धनी होगा।
रक्ताक्षी ५८ १९८४-१९८५ २०४४-२०४५	जो मनुष्य रक्ताक्षी संवत्सर में उत्पन्न होता है वो सदाचार और धर्म में लगा रहता है, अत्यंत कामी होता है, दूसरों के विकास को सहन नहीं कर पाता है और हमेशा रोगग्रस्त या बीमार रहता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म वर्ष रक्ताक्षी (२०४४-२०४५ ई.) में होता है वो शान्तचित्त, स्वजनों से प्रेम करने वाला, अत्यंत सौभाग्यशाली एवं मिलनसार होगा।

संवत्सर - वैदिक वर्ष	
क्रोधन ५९ १९८५-१९८६ २०४५-२०४६	क्रोधन नाम के संवत्सर में जन्म हो तो जातक दूसरों के कार्य में विघ्न डालता है, तमोगुणी होता है (उसके स्वभाव में तमस का गुण सर्वाधिक होता है। मनुष्य की प्रकृति या स्वभाव में 'सत्व', 'रजस' और तमस 'तीन प्रधान तत्व होते हैं), भयंकर या भयानक होता है और दूसरों को भ्रम में डालता है (दूसरों को धोखा देता है)। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म क्रोधन वर्ष (२०४५-२०४६ ई.) में हुआ हो वो दुष्ट तरीकों का आदी, अपने रिश्तेदारों से घृणा करने वाला और लुटेरों को समर्पित एक व्यसनी इंसान होगा।
अक्षय/क्षय ६० १९८६-१९८७ २०४६-२०४७	जिसका जन्म अक्षय नाम के संवत्सर में होता है, वह जातक अपने द्वारा कमाए गए धन को बहुत जल्दी खर्च कर देता है, दूसरों की सेवा करने की प्रवृत्ति रखता है, कठोर हृदय का होता है और अच्छे कर्म करने की इच्छा नहीं रखता है। जातक पारिजात के अनुसार जिस व्यक्ति का जन्म वर्ष अक्षय (२०४६-२०४७ ई.) में हुआ हो वो सदाचारी, हर्षित, रूपवान, उच्च सम्मान की भावना से संपन्न और शत्रुओं और व्याधियों से मुक्त होगा।
	विस्तृत संवत्सर विवरण satva.blogspot.com से।

लग्न - लग्न का चिन्ह

लग्न राशि - लग्न का चिन्ह		
मेष	एरीस	मेष लग्न में जन्म लेने वाले लोग औसत कद के होते हैं, उनकी आंखें टेढ़ी होती हैं, और अन्य राशियों के तहत पैदा हुए अधिकांश लोगों की तुलना में बेहतर अंतर्ज्ञान या सहज बोध होता है। एक एरियन जल्दी से यह पता लगा लेता है कि दूसरा व्यक्ति क्या सोच रहा होगा (जरूरी नहीं कि दूसरा व्यक्ति क्या महसूस कर रहा हो)। उनके शरीर अकसर गठीला, भूरे बाल और एक लंबा चेहरा होता है। एरियन आमतौर पर निर्णायक और स्वतंत्र विचारक होते हैं। वे जीवन में सुंदर चीजों की सराहना करते हैं और महान दूरदर्शिता रखते हैं।
वृष	टौरस	बहुत मजबूत दिमाग वाला। वे अक्सर अपनी आंतरिक आवाज के आधार पर अपनी राय बनाते हैं और उस पर कायम रहते हैं। वे हमेशा बहस कर सकते हैं। वृषभ राशि के लोग सुंदर त्वचा और भरे हुए होंठों के साथ अच्छी तरह से निर्मित होते हैं। उनके बड़े माथे होते हैं। अधिकांश लोगों की तुलना में उनके कम दोस्त होते हैं ,पर वे अच्छे और आजीवन दोस्त बनाते हैं। जैसे एक बैल घंटों तक जुगाली करता है, वैसे ही कई बार वे जल्दबाजी में काम करते हैं (सामानयतः जल्दबाजी में कुछ कह जाना) और फिर घंटों पछताते रहते हैं। वृषभ राशि के जातक स्वाभाविक रूप से रचनात्मक होते हैं।
मिथुन	जैमिनी	मेहनती और महत्वाकांक्षी, परन्तु तभी जब वे जो करते हैं उसे पसंद करते हैं। जैमिनी पुरुष आमतौर पर दुबले शरीर वाले होते हैं लेकिन महिलाओं के मामले में अच्छी तरह से भरे पूरे होते हैं। संतोष मिलना मुश्किल है क्योंकि उनके प्रयासों और लक्ष्यों के बीच लगभग हमेशा एक बेमेल होता है। वे शक्तिशाली विद्रोही हो सकते हैं क्योंकि मिथुन राशि के लोग बहादुर होते हैं और जोखिमों से नहीं डरते। उन्हें लगातार कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

लग्न राशि - लग्न का चिन्ह		
कर्क	कैंसर	कर्क राशि वाले भावुक और दयालु लोग होते हैं। एक बार जब वे किसी कारण या व्यक्ति के बारे में भावुक हो जाते हैं तो वे अपनी देखभाल करने में असमर्थ हो जाते हैं। सफलता अकसर इन्हें धीमी गति से मिलती है लेकिन यह इन्हें कड़ी मेहनत करने से नहीं रोकता पाता। वे रचनात्मक गतिविधियों का आनंद लेते हैं। वे आमतौर पर लम्बे कद के, अच्छी तरह से आनुपातिक होते हैं लेकिन किसी न किसी शारीरिक बीमारी से पीड़ित होते हैं। वे किसी दिए गए क्षेत्र में गहराई तक जाने के बजाय व्यापक जाना पसंद करते हैं। उनके जीवन का अधिकांश हिस्से में उनके पास ढेर सारे विकल्प होते हैं।
सिंह	लियो	सिंह राशि के जातक जब क्रोधित होते हैं तो उनके साथ खिलवाड़ नहीं करना ही बेहतर होता है, और क्रोध उनकी एकमात्र प्रमुख कमजोरी है। सिंह प्रगतिशील विचारक होते हैं और रचनात्मक गतिविधियों का आनंद लेते हैं। उनके पास एक आकर्षक बनावट, एक प्रमुख जॉलाइन और एक गोल शरीर होता है। वे बहुत अनुकूलनीय और अक्सर काफी लचीले होते हैं। मुख्य नकारात्मक पक्ष उनमें यह होता है कि वे कुछ ज्यादा ही तेजी से संतुष्ट हो जाते हैं।
कन्या	वर्गो	कन्या राशि के लोग आमतौर पर अच्छी तरह से निर्मित, तेज विशेषताओं और सुंदर चेहरे वाले होते हैं। वे हमेशा कुछ नया करने के लिए उत्सुक रहते हैं क्योंकि वे आसानी से ऊब जाते हैं। अन्य राशियों की तुलना में वर्गो, अधिक दृश्य के प्रति आकर्षित रहते हैं। उदाहरण के लिए, किताबें पढ़ना उनके बस की बात नहीं है, लेकिन वे लगातार घंटों तक दृश्य सामग्री का उपभोग कर सकते हैं। वे आसानी से अपने मन की बात नहीं कहते हैं और अकसर जो वे कहते हैं वह वैसा नहीं होता जैसा कि वे कह रहे होते हैं।
तुला	लिब्रा	वे स्वाभाविक रूप से सहज हैं और पूर्णतावादी (हर काम में सौ प्रतिशत उत्तमता खोजना) होते हैं। वे रचनात्मक गतिविधियों का आनंद लेते हैं और उन चीजों और लोगों के बारे में आदर्शवादी विचार रखते हैं जिन पर वे विश्वास करते हैं। मध्यम कद काठी के होते हैं, तुला राशि के लोग आमतौर पर चौड़ी छाती वाले, दयालु और बुद्धिमान होते हैं। वे महान दूरदर्शी बनते हैं और वास्तव में बड़ी योजनाओं को अंजाम दे सकते हैं।

लग्न राशि - लग्न का चिन्ह		
वृश्चिक	स्कार्पियो	इनकी आंखों में चमक और बहुत ही आकर्षक विशेषताएं होती हैं। पुरुषों में स्कॉर्पियोस में किसी भी अन्य चिन्ह की तुलना में अधिक मर्दाना लक्षण और विशेषताएं हैं। वे बहुत बातूनी हो सकते हैं और काफी फ्लर्ट कर सकते हैं। उनका सीधापन बहुत आकर्षित करता है। वे दूसरे लोगों को चिढ़ाना पसंद करते हैं, लेकिन अगर उन्हें चिढ़ाता है तो वो उसे ठीक से ले नहीं पाते। जिसकी लाठी उसकि भैंस और रोम में रोमन जैसा ही उनका मंत्र होता है।
धनु	साजिटेरियस	ये लोग महान दार्शनिक, विश्वासी और स्वप्नदृष्टा बनते हैं। ये दूसरों पर बहुत आसानी से भरोसा कर लेते हैं और अकसर इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ता है। उनके चेहरे गोल और उनकी मुस्कान करिश्माई होती है। वे महान पर्यवेक्षक बनते हैं क्योंकि उनके पास शारीरिक प्रयास में जो कमी होती है, उसे वो शब्दों में बयां कर देते हैं। वे सादगी पसंद करते हैं और आमतौर पर दिखावटीपन और घमंड से बचते हैं।
मकर	कैप्रिकॉर्न	यदि वे नहीं चाहते हैं तो वे आपको वह नहीं बताएंगे जो वे जानते हैं। मकर राशि से जानकारी प्राप्त करना सबसे कठिन है। वे आमतौर पर दुबले और फुर्तीले होते हैं। वे पैसा बनाने में अच्छे हैं लेकिन कैश फ्लो के प्रबंधन में कमजोर होते हैं। अकसर, उन्हें बार-बार आश्वासन की आवश्यकता पड़ती है और मकर राशि वाले बहुत बातूनी होते हैं। वे अच्छे अभिनेता बनते हैं और एक पल में अपनी धारणा और राय बदल जाते हैं।
कुंभ	एक्वेरियस	कुंभ राशि के लोग भरोसेमंद लोग होते हैं पर वे खुलने और दोस्त बनाने में अपना समय लगाते हैं। लेकिन, एक बार जब वे किसी के दोस्त बन जाते हैं, तो वे बहुत लंबे समय तक बने रहते हैं। वे आमतौर पर लंबे, अच्छी तरह से निर्मित और आकर्षक दिखने वाले होते हैं। वे कुदाल को कुदाल कहते हैं अर्थात सीधी और स्पष्ट बात करते हैं और किसी अन्य राशि की तुलना में जीवन में आनेवाले अचानक मोड़ के अधीन होते हैं।
मीन	पाइसीज	ये लोग महान मेजबान और सफल राजनेता बनते हैं क्योंकि वे बहुत मेहमाननवाज और सहज बात करने वाले होते हैं। मीन राशि के लोग मिलनसार होते हैं जो किसी एक सोच के लिए समर्पित होते हैं। वे औसत ऊंचाई के होते हैं और अक्सर घुंघराले बाल के होते हैं। हालाँकि वे सबसे अधिक ध्यान-केंद्रित (या कुछ मामलों में आत्म-केंद्रित) होते हैं, वे अपने शत्रुओं के प्रति भी दयालु होते हैं। वित्त और एकाउंटिंग उनकी विशेषता नहीं है, लेकिन वे रचनात्मक गतिविधियों में उत्कृष्ट होते हैं।

षोडशवर्ग - कुंडली के सोलह पहलू

षोडशवर्ग			
लग्न	पूर्ण चिह्न	30°	समग्र
होरा	आधा	15°	धन-संपत्ति
द्रेष्काण	एक तिहाई	10°	भाई-बहन
चतुर्थांश	एक चौथाई	7° 30’	आराम (सुख)
सप्तमांश	एक का सातवां भाग	4° 17’ 8.5”	संतान
नवमांश	एक का नौवां भाग	3° 20’	भाग्य
दशमांश	एक का दसवां भाग	3°	करियर
द्वादशांश	एक का बारहवां भाग	2° 30’	आध्यात्मिकता
षोडशांश	एक का सोलहवां भाग	1° 52’ 30”	वाहन
विशांश	एक का बीसवां भाग	1° 30’	बुद्धि
चतुर्विशांश	एक का चैबीसवां भाग	1° 15’	पिछला जन्म
सप्तविंशांश या भांश	एक का सत्ताइसवां भाग	1° 6’ 40”	जीवनसाथी के माता-पिता का जीवन
त्रिशांश	एक का तीसवां भाग	1°	भुजबल (शारीरिक ताकत)
खवेदांश	एक का चालीसवां भाग	45”	मातृ पक्ष
अक्षवेदांश	एक का पैंतालीसवां भाग	40 सेकंड्स	पितृ पक्ष
षष्ट्यंश	एक का साठवाँ भाग	30 सेकंड्स	पूर्वज

द्वादश भाव - कुंडली के बारह घर

पराशर संहिता और कालिदास और वरमिहिर की रचनाओं के अनुरूप। भावानुवाद पाठ astro-prophets.com से लिया गया है।

द्वादश भाव - बारह घर		
प्रथम	पहला	पहला घर या जिसे आमतौर पर लग्न या लग्न के रूप में जाना जाता है, घरों में सबसे महत्वपूर्ण होता है। वैदिक ज्योतिष में इसे "तनु या तनु भाव" कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है, "शरीर का घर"। यह सामान्य रूप से जन्म, जीवन की शुरुआत, व्यक्तित्व, व्यक्तिगत विशेषताओं, रूप, शरीर, चरित्र, स्वभाव, व्यक्तित्व, आत्म चेतना और संविधान को दर्शाता है। स्वास्थ्य के मामले में लग्न हमेशा एक महत्वपूर्ण कारक होता है क्योंकि यह व्यक्ति की जीवन शक्ति और जोश, उसके प्राकृतिक स्वभाव और जीवन के लिए प्रवृत्तियों और संघर्ष, प्रयासों में उसकी सफलता या विफलता, उसके भाग्य या दुर्भाग्य आदि को भी इंगित करता है। समग्र रूप से जीवन के प्रति हमारे उन्मुखीकरण को निर्धारित करने में कारक। इसलिए यह सर्वोच्च महत्व का है।

द्वादश भाव - बारह घर		
द्वितीय	दूसरा	दूसरा भाव व्यक्ति के वित्त, भौतिक संसाधनों, धन के प्रति दृष्टिकोण और धन कमाने की क्षमता, परिवार, वाणी और स्वयं के मूल्य को नियंत्रित करता है। दूसरा घर धन का घर है। यह व्यक्ति की वित्तीय परिस्थितियों, भाग्य, लाभ या हानि और वित्तीय समृद्धि को दर्शाता है। यह घर दिखाता है कि व्यक्ति व्यक्तिगत प्रयास से क्या हासिल करता है और समृद्धि की डिग्री जो वह बाहरी मूल्य बांड, स्टॉक, नकदी और बैंक बैलेंस आदि के सभी संपत्ति के साथ आनंद उठाएगा। यह कमाई क्षमता, जीवन में स्वयं को प्रदान करने की क्षमता से संबंधित है। यह कैरियर का संकेत नहीं देता है लेकिन वित्तीय सफलता का संकेत देता है। संक्षेप में, जो कुछ भी हासिल किया जाता है वह इस घर के दायरे में आता है। यह भौतिक चीजों के संदर्भ में, बल्कि किसी की भावनाओं और भावनाओं के साथ-साथ हमारे आंतरिक स्वयं, क्षमताओं, जरूरतों और संक्षेप में हमारे स्वयं के मूल्य के संदर्भ में सीमित नहीं है। यह घर परिवार के साथ भी व्यवहार करता है। इसमें किसी विशेष रिश्ते के संदर्भ के बिना व्यक्ति के सभी करीबी रिश्तेदार शामिल हैं। निकटतम परिवार को दादा, दादी, मां, पत्नी, बच्चे, भाई, बहन आदि पसंद हैं। दूसरे घर का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव व्यक्ति के अपने विचारों, वाणी या वाणी को व्यक्त करने की क्षमता है। यह दृष्टि या अवलोकन की शक्ति का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह मारक या मृत्यु देने वाले घरों में से एक है और अन्य इस तरह का घर 7वां घर होता है।

द्वादश भाव - बारह घर		
तृतीया	तीसरा	तीसरा घर एक व्यक्ति के संचार और पत्राचार, छोटी यात्रा, छोटे भाई या बहन, चचेरे भाई और पड़ोसियों, साहस, वीरता, विचार, मानसिक शक्ति, झुकाव और क्षमता, स्मृति और मन और बुद्धि की अंतर्निहित प्रवृत्तियों को नियंत्रित करता है। तीसरा घर सभी प्रकार के संचार, पत्राचार और सूचनाओं के आदान-प्रदान का घर है, जिसमें व्यक्ति बातचीत, पत्र, फैक्स, ईमेल, टेलीविजन, रेडियो, समाचार, मीडिया, फोन आदि से जुड़ा होता है। यह छोटी यात्रा, अंतर्देशीय यात्राओं को भी नियंत्रित करता है। जैसे साइकिल, बस, नाव, रेल से यात्रा करना और छोटी हवाई यात्रा । यह छोटे भाई-बहनों, सभी चचेरे भाई-बहनों और यहां तक कि पड़ोसियों को भी नियंत्रित करता है। यह मन की संपत्ति, उसकी ताकत और कमजोरी, विचार शक्ति, मानसिक रुचि और झुकाव, साहस और वीरता को इंगित करता है। तीसरा घर निवास के परिवर्तन को भी नियंत्रित करता है।

द्वादश भाव - बारह घर		
चतुर्थ	चौथा	चौथा घर एक व्यक्ति के घर और घर, माँ, किसी की जड़ें, घरेलू मामले, मूर्त संपत्ति और संपत्ति जैसे भूमि, भवन, खदान, खेत और वाहन, खुशी, शिक्षा, जीवन के अंत में स्थिति और अंतिम विश्राम स्थान को नियंत्रित करता है। या कब्र। चौथा भाव व्यक्ति के घर, निवास, घरेलू वातावरण और उसके जीवन के बाद के भाग में व्यक्ति की सामान्य स्थिति से संबंधित होता है। इस घर को कब्र या गर्भ भी कहा जाता है जिससे यह माँ से संबंधित है और यह सब कुछ छिपी हुई चीज़ों जैसे कि निजी मामलों और रहस्यों से संबंधित है। चौथा किसी की ज़मीन-जायदाद या अचल संपत्ति को भी दिखाता है, जिसमें वह भी शामिल है जो पट्टे या किराए पर लेता है और साथ ही साथ अन्य लोगों को पट्टे पर दिया जाता है। चौथा यह दर्शाता है कि व्यक्ति के पास स्वयं के वाहन होंगे या दूसरों के वाहनों का आनंद लेंगे। इस घर से सभी स्थायी संपत्ति जैसे खेत, खलिहान, खदान, अचल संपत्ति, उद्यान, भवन, आवास, पुरावशेष प्रभावित होते हैं। इस भाव का प्रभाव व्यक्ति की शिक्षा और योग्यता पर पड़ता है। इस संबंध में चौथा घर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को दर्शाता है।

द्वादश भाव - बारह घर		
पंचम	पाँचवा	पंचम भाव एक व्यक्ति की रचनात्मकता और आत्म-निर्माण, आत्म-अभिव्यक्ति, बच्चों, पूर्व पुण्य या पिछले जन्मों में किए गए पुण्य कार्यों, रोमांस, प्रेम संबंधों, अटकलों, शौक, पसंदीदा गतिविधियों, खेल और खेल को नियंत्रित करता है। पाँचवाँ घर रचनात्मकता का घर है और इसमें वह सब कुछ शामिल है जो संतान सहित बनाता है। यह दर्शाता है कि किसी के बच्चे होंगे या नहीं। पंचम भाव गर्भधारण की बात करता है। पंचम भाव आनंद और सामाजिक झुकाव की अध्यक्षता करता है। यह स्वाद और कल्पना कलात्मक प्रतिभाओं से संबंधित है। मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, खेल, रोमांस और इसी तरह की रुचि जो किसी व्यक्ति को आकर्षित करती है, उसे इस भाव से दर्शाया जाता है। यह खेल, खेल, सिनेमा, ओपेरा, नाटक, संगीत, नृत्य और सभी प्रकार के मनोरंजन जैसे सभी भौतिक सुखों से जुड़ा हुआ है। पंचम भाव एक त्रिकोण भाव होने के कारण पूर्व पुण्य को दर्शाता है कि कोई व्यक्ति पूर्व जन्म में क्या पुण्य कर्म कर सकता था। यह सट्टा मामलों और इच्छा प्रकृति द्वारा प्रेरित उद्यम के सभी मामलों से भी संबंधित है। संयोग के सभी खेल जैसे ताश, वर्ग पहेली, पासा, घोड़ा, शेयर, लॉटरी, जुआ या सट्टा पंचम भाव के अंतर्गत आते हैं। जातक के प्रेम संबंध, प्रेम संबंधों में प्राप्त सफलता या असफलता की मात्रा, प्रेमालाप और कामुकता, विवाह से पहले या विवाह के बाद वैध और नाजायज आकर्षण इस भाव के अंतर्गत आते हैं। इसे विपरीत लिंगों के बीच भौतिक और चुंबकीय आकर्षणों की स्थिति का प्रतिनिधित्व करने वाला कहा जा सकता है।

द्वादश भाव - बारह घर		
षष्टम	छटवाँ	छठा भाव व्यक्ति के स्वास्थ्य और बीमारी, आहार, ऋण, श्रम, सेवा, कार्य, दैनिक दिनचर्या, सहकर्मियों, मामा-मामी, पाप, दुष्ट कार्य और भय का कारक होता है। छठा भाव बीमारी और रुग्णता, रोग की वास्तविक स्थिति, उससे उबरने और चाहे वह लंबी हो या छोटी अवधि की हो, को दर्शाता है। यह भोजन, आहार संबंधी आदतों और दैनिक दिनचर्या से भी संबंधित है क्योंकि अधिकांश अस्वस्थता अकसर इनके अनुचित प्रबंधन के कारण होती है। छठा भाव व्यक्ति के काम और सेवा से भी जुड़ा होता है। यह उसके कर्मचारियों, अधीनस्थों या नौकरों को भी दर्शाता है - चाहे वह दूसरों की सेवा में हो या उसके पास अन्य कर्मचारी हों। इस घर से अपने से नीचे के लोगों की स्थिति और वफादारी का पता लगाया जा सकता है। छठा भाव कर्ज या कर्ज का भाव भी होता है।

द्वादश भाव - बारह घर		
सप्तम	सातवाँ	सप्तम भाव व्यक्ति के रिश्तों और साझेदारी, विवाह, पत्नी या पति, कानूनी बंधन, मुकदमे, झगड़े, तलाक, खुले शत्रुओं का कारक होता है। सप्तम भाव किसी भी व्यक्ति पर शासन करता है जिसके साथ वह बातचीत करता है वह 'दूसरा' है, यह सहकर्मी, ग्राहक, परत, डॉक्टर या कोई एक, विरोधी हो सकता है। यह भतीजी और भतीजे को भी नियंत्रित करता है। सप्तम भाव "मिलन या मिट्टी के संबंधों का घर" है, इसका अर्थ ज्यादातर विवाह होता है। जीवन साथी के अलावा व्यवसाय में भागीदार और इस तरह की साझेदारी के माध्यम से प्राप्त सफलता की मात्रा भी इस भाव से दिखाई जाती है। सप्तम भाव उन सभी को भी संदर्भित करता है जिनके साथ जातक किसी अनुबंध या समझौते में प्रवेश करता है, जिनके साथ जातक झगड़े में शामिल होता है और संघर्ष में आता है, किसी भी उपक्रम में जातक का प्रतियोगी, किसी भी प्रतियोगिता में उसका प्रतिद्वंद्वी। संक्षेप में, सप्तम भाव उन सभी को दर्शाता है जिनके साथ जातक किसी भी तरह का लेन-देन या अनुबंध करता है। जुर्माना, तलाक, कानूनी बंधन, समझौते, अनुबंध आदि अन्य मामले हैं जो सप्तम भाव द्वारा शासित होते हैं। सप्तम भाव यात्रा के विराम को दर्शाता है। यह मारक या मृत्यु देने वाले भावों में से एक है और दूसरा भाव दूसरा भाव है। मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशियों के लिए सप्तम भाव भाधक या जीवन बाधक भाव भी है।

द्वादश भाव - बारह घर		
अष्टम	आठवाँ	आठवां भाव व्यक्ति की दीर्घायु, पराजय, अपमान, दुख, लांछन, बाधाएं, बाधा, परिवर्तन, उत्थान, कामुकता, अनर्जित धन, गुप्त मामलों और मृत्यु को नियंत्रित करता है। आठवें घर को किसी की लंबी उम्र या जीवन काल पर सीधा असर माना जाता है क्योंकि यह घर मृत्यु के प्रकार को बताता है, चाहे वह प्राकृतिक मौत हो या अप्राकृतिक मौत जैसे कि डूबना, आग लगना, दुर्घटना या आत्महत्या या पुरानी बीमारी और चाहे यह एक धीमी या अचानक और हिंसक मौत है। विरासत, वसीयत, कर, वसीयत, बीमा आदि से संबंधित सभी। अष्टम भाव उसके अनर्जित धन या लाभ के हिस्से या विरासत के माध्यम से आने वाले धन से संबंधित है। आठवें घर को रहस्य और दुख के घर के रूप में भी जाना जाता है, इसका संबंध दुर्भाग्य और मानसिक चिंता, दुःख और संघर्ष, चिंता, देरी, निराशा, निराशा, हार, हानि, बाधा, दोष और बदनामी आदि से है।

द्वादश भाव - बारह घर		
नवम	नौवां	नौवां घर किसी के शिक्षक या गुरु, उच्च शिक्षा और उच्च ज्ञान, लंबी यात्रा, भाग्य, भाग्य, प्रचार, पोते, पूजा, तपस्या, धर्म, प्रार्थना, आध्यात्मिक दीक्षा और झुकाव को नियंत्रित करता है। यह आस्था, ज्ञान और पूजा का घर है। नौवां घर धार्मिक और दार्शनिक मान्यताओं को नियंत्रित करता है, चाहे एक पादरी धार्मिक, समर्पित, धर्मार्थ, रूढ़िवादी या ध्यानी हो, इस घर से सभी का पता लगाया जा सकता है। यह एक शुभ घर माना जाता है क्योंकि यह पिछले कर्मों के परिणामस्वरूप वर्तमान जीवन में किसी के भाग्य को दर्शाता है। नवम भाव अंतर्ज्ञान और शुद्ध कारण का घर है जो उच्च शिक्षा, उच्च ज्ञान और उच्च विचार को नियंत्रित करता है। कॉलेजिएट, अकादमिक, दार्शनिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक या वैज्ञानिक - ज्ञान की डिग्री इस घर से विकसित हो सकती है। नवम भाव अनुसंधान, आविष्कार, खोज और अन्वेषण को दर्शाता है। नवम भाव प्रकाशन और सभी प्रकार के विज्ञापन, लंबी यात्रा, समुद्री यात्रा, हवाई यात्रा आदि को नियंत्रित करता है। यह दूर स्थानों या देशों में यात्रा की मात्रा और वहां प्राप्त सफलता को निर्धारित करता है। हम कह सकते हैं कि यह किसी के क्षितिज को व्यापक बनाने से संबंधित घर है।

द्वादश भाव - बारह घर		
दशम	दसवां	दशम भाव व्यक्ति के कार्य, वाणिज्य, व्यापार, व्यवसाय, सफलता, प्रसिद्धि, पद या बाहरी दुनिया में स्थिति को नियंत्रित करता है। दसवां घर किसी के नाम, प्रसिद्धि, सम्मान और मान्यता को प्रभावित करने वाले सभी मामलों से संबंधित है; इसे सम्मान, गरिमा और सार्वजनिक सम्मान के घर के रूप में वर्णित किया गया है। दसवें घर का मुख्य प्रभाव किसी के पेशे, व्यवसाय या व्यवसाय पर होता है। इसे सही रूप में कुंडली का शीर्ष कहा जाता है, क्योंकि यह नाम और प्रसिद्धि, शक्ति और प्रतिष्ठा, क्रेडिट और आचरण, सफलता और स्थिति, पद और प्रतिष्ठा, सम्मान और प्रतिष्ठा, और महत्वाकांक्षा और अधिकार के माध्यम से प्राप्त व्यक्ति की सांसारिक उपलब्धियों को दर्शाता है। किसी का सार्वजनिक जीवन और लोकप्रियता, भौतिक सफलता के मामले में उसकी सांसारिक स्थिति और उच्च पद पर आसीन लोगों के साथ उसके संबंध को दशम भाव की ताकत की परीक्षा से आंका जाना चाहिए।

द्वादश भाव - बारह घर		
एकादश	ग्यारहवां	एकादश भाव व्यक्ति के मित्रों, सामाजिक दायरे, लाभ, लाभ, सभी प्रकार की आय, अधिग्रहण, इच्छा और इच्छा पूर्ति को नियंत्रित करता है। 11वें भाव का संबंध मित्रों से होता है। यह उन सभी के लिए खड़ा है जो समाज, समुदाय, क्लब आदि में हित की समानता या सहानुभूति से मूलनिवासी से संबद्ध हैं। इसमें शुभचिंतक और करीबी परिचित शामिल हैं। इसमें किसी की आशाएं, इच्छाएं और आकांक्षाएं और उनकी प्राप्ति भी शामिल है। एकादश भाव किसी भी उपक्रम में सफलता को नियंत्रित करता है, चाहे वह पेशे या व्यवसाय, उच्च अध्ययन या चुनाव, मुकदमेबाजी, सट्टा, स्वास्थ्य आदि में हो। यह आय की किस्मों को इंगित करता है; 11वें घर को आमतौर पर 'लाभा-स्थान' के रूप में जाना जाता है जो लाभ या लाभ को दर्शाता है। इस घर के माध्यम से आने वाले धन की उम्मीद की जाती है। व्यक्ति को सामाजिक और वित्तीय मामलों में कितना सफल होगा और क्या वह सफल होगा, यह पता लगाने के लिए 11 वें घर की जांच करनी होगी। यह घर जातक के समाज के प्रति दृष्टिकोण और व्यक्तिगत लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं से अलग सामाजिक गतिविधियों के लिए उसकी रुचि को दर्शाता है। यह सुधारात्मक और अपरंपरागत गतिविधियों से भी संबंधित है। यह बड़े भाई या बहन, मामा को नियंत्रित करता है।

द्वादश भाव - बारह घर		
द्वादश	बारहवां	12वां भाव किसी व्यक्ति के बंधन, कारावास, कारावास, खर्च, हानि, गरीबी, दुख, भय, विदेश में रहने, अंतिम मुक्ति, बायीं आंख और पैर को नियंत्रित करता है। 12वां घर जन्म और मृत्यु की श्रृंखला से अंतिम मुक्ति और उसके परमात्मा के साथ विलय और उसके अस्तित्व की भविष्य की स्थिति को दर्शाता है। 12वां घर हानि और बाधाओं, संयम और सीमा, अपव्यय और अपव्यय, व्यय और हानि से संबंधित है। इस तरह के खर्च सुखद और अपेक्षित होंगे या अप्रिय और अप्रत्याशित इस बारहवें भाव और गोचर और संचालन में ग्रहों की अवधि पर निर्भर करेगा। यह सभी प्रकार की खरीद, निवेश, दान, दान और परोपकारी संस्थानों के साथ सहयोग को नियंत्रित करता है। दु:ख, पाप, बाधाएं और रास्ते में बाधाएं, दुख और दुर्भाग्य, गरीबी और उत्पीड़न, साज़िश और कारावास, भय, मन की गुप्त मेहनत, हीन भावना, चिंता, संदेह, मौन पीड़ा, आत्म-विनाश, मन का गुप्त कार्य, गुप्त शत्रु, षड़यन्त्र और षड़यन्त्र, षड्यंत्र, धूर्तता, ईर्ष्या, द्वेष, कपट, छल कपट, कपट सभी 12वें भाव के प्रभाव में आते हैं। यह आत्म-बलिदान का भाव भी है और निःस्वार्थ कर्मों को दर्शाता है।

नोट्स

End of document